



ONGC
ENERGY: Now AND Next

ओएनजीसी राजमहेन्द्री की ई-पत्रिका, वर्ष 2025-26 (अंक 1)



अरुण कुमार सिंह

Arun Kumar Singh

अध्यक्ष एवं सीईओ

Chairman and CEO

ओएनजीसी

ONGC



संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि राजमहेन्द्री परिसंपत्ति की ई-हिन्दी गृह-पत्रिका 'गोदावरी' का प्रकाशन किया जा रहा है।

हिन्दी भाषा के प्रति हमारे व्यक्तिगत और सामाजिक रुझान का माध्यम ऐसी ही पत्रिकाएं बनती हैं और पत्रिका 'गोदावरी' का प्रकाशन इसी दिशा में एक पहल है। ऐसे प्रयासों से हम हिन्दी को व्यापक रूप से स्वीकार्य बनाने में महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

मेरा विश्वास है कि इस पत्रिका के द्वारा ओएनजीसी राजमहेन्द्री परिसंपत्ति के सभी कार्मिकों में राजभाषा हिन्दी के प्रति जागरूकता में वृद्धि होगी। इसके लेखों के माध्यम से पाठकों में ज्ञानवर्धन और रचनात्मक कौशल के विकास के प्रति भी रुचि उत्पन्न हो सकेगी।

मैं आशा करता हूँ कि 'गोदावरी' पत्रिका का यह अंक सभी पाठकों के मानस में भाषा और भावों का अद्भुत संवाद स्थापित करने में सफल होगा।

राजमहेन्द्री परिसंपत्ति के सभी कार्मिकों एवं उनके परिजनों को गृह-पत्रिका 'गोदावरी' के प्रकाशन के अवसर पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

A handwritten signature in black ink, appearing to read 'Arun Singh'.

(अरुण कुमार सिंह)

दिनांक : 15 अप्रैल, 2025







संदेश

यह हर्ष का विषय है कि राजमहेन्द्री परिसंपत्ति द्वारा उनकी ई-हिन्दी गृह पत्रिका 'गोदावरी' का प्रकाशन किया जा रहा है।

हिन्दी एक ऐसी भाषा है, जिसके माध्यम से देश का अधिकांश जनमानस आपस में संपर्क स्थापित कर पाता है। हम सभी ओएनजीसी के कार्मिक भी ऐसी पत्रिकाओं एवं उसमें सम्मिलित लेखों के माध्यम से एक भाषायी सूत्र से जुड़ जाते हैं। ओएनजीसी के कार्मिकों के रूप में, हम अपने विभिन्न कायकिन्द्रों पर भी हिन्दी के प्रचार एवं प्रयोग से राजभाषा के प्रति अपने दायित्वों का निर्वाह करते हैं।

मुझे पूरा विश्वास है कि आपके प्रयासों से सभी कार्मिकों को राजभाषा हिन्दी में काम करने और दैनिक कार्यों में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के संकल्प को और अधिक बल मिलेगा। ऐसी पत्रिकाएं अपने प्रयास से पाठकों में तकनीकी ज्ञान के साथ-साथ भावनात्मक तुष्टि के स्तर पर भी लाभकारी सिद्ध होंगी।

राजमहेन्द्री परिसंपत्ति के सभी कार्मिकों को इस पत्रिका के लिए शुभकामनाओं के साथ मेरी यही आशा है कि भविष्य में भी आप सभी इसी प्रकार अपनी रचनात्मकता और सुजनशीलता से राजभाषा हिन्दी की सेवा में सहयोग करते रहेंगे।

मनीष पाटील
(मनीष पाटील)





शांतनु दास
कार्यकारी निदेशक - परिसंपत्ति प्रबंधक
Santanu Das
Executive Director - Asset Manager

राजमहेन्द्री परिसंपत्ति:
गोदावरी भवन, बेस काम्पलेक्स,
राजमहेन्द्री-533106 (आं.प्र.)

Rajahmundry Asset:
Godavari Bhavan, Base Complex, Rajahmundry-533105 (A.P)
0883-2424348, + 91 9426614976, santanu_das@ongc.co.in



संदेश

ओएनजीसी राजमहेन्द्री परिसंपत्ति की ई - हिन्दी गृह पत्रिका 'गोदावरी' का प्रकाशन मेरे लिए हर्ष के साथ-साथ गर्व का विषय है।

हमारे कार्यकेन्द्र ने निरंतर तेल एवं गैस उत्पादन के क्षेत्र में प्रगति के संकल्प को साकार करने की ओर कदम बढ़ाए हैं। लेकिन साथ ही अपने कार्मिकों में वैचारिक एवं भावनात्मक सुजनशीलता को भी प्रखर बनाने का हमारा सतत प्रयास रहा है। यह पत्रिका इसी सुनियोजित प्रयास का प्रतिफल है।

भाषाएं अपने मूल में ही मातृत्व के पालक स्वभाव से सिंचित होती हैं, और हिन्दी को तो हमारे राष्ट्र में राजभाषा का गौरव भी प्राप्त है। राजभाषा के रूप में हिन्दी का दैनिक सरकारी कार्यों में प्रयोग करना हम सभी ओएनजीसी कार्मिकों का सामूहिक दायित्व भी है। साहित्य और भाषा हमारी अभिव्यक्ति का साधन भी हैं, और इसी प्रक्रिया में हमारे वैचारिक आदान-प्रदान का माध्यम भी। इस माध्यम के प्रयोग से हम सभी कार्मिक भी अपने आपसी सामंजस्य को साध सकेंगे।

मेरी कामना है, कि ऐसी पत्रिका और उसमे निहित आलेखों के द्वारा, राजमहेन्द्री परिसंपत्ति के कार्मिक अपने ज्ञान और अनुभव की सीमाओं को और व्यापक विस्तार दे सकेंगे।

शुभकामनाओं सहित,

राजमहेन्द्री
दूसरा

(शांतनु दास)



ONGC

R.S. Rama Rao
आर.एस. रामा राव

CGM (HR) Head HR
मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं) प्राधान मा.सं

ऑयल एण्ड नेचुरल गैस कॉरपोरेशन लिमिटेड
Oil and Natural Gas Corporation Limited



संदेश

हिन्दी भाषा और उसमें उपलब्ध साहित्य ने हमारे समाज को विभिन्न रूपों में समृद्ध किया है। मुझे प्रसन्नता है कि इसी कड़ी में राजमहेन्द्री परिसंपत्ति की ई - हिन्दी गृह पत्रिका 'गोदावरी' का प्रकाशन किया जा रहा है।

किसी पत्रिका और उसमें निहित लेखों में हमें समाज को करीबी से समझने के सूत्र मिलते हैं। यह पत्रिका 'गोदावरी' अपने सम्पूर्ण कलेवर में विभिन्न वैचारिक परिवेशों और अभिव्यक्तियों का समागम है। इसके माध्यम से राजमहेन्द्री परिसंपत्ति के कार्मिकों की उत्कृष्ट रचनात्मकता और तकनीकी विषयों के साथ-साथ रागात्मक संवेदनाओं को भी प्रकट किए जाने का अवसर प्राप्त होगा।

राजभाषा हिन्दी हमें दायित्व, कर्तव्य और गर्व का बोध कराती है। अपने कार्यालय में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग और प्रचार द्वारा हम भारत सरकार के उस संकल्प को दढ़ता प्रदान करने में सहायक होंगे जिसके तहत हम राष्ट्रीय गौरव के चिह्नों को पहचान दिलाते हैं। हिन्दी को सही अर्थों में राजभाषा का पद तभी प्रदान किया जा सकता है, जब हम सभी इसके प्रति समर्पित भाव से एकजुट होकर इसमें काम करें।

मुझे अडिग विश्वास है, कि एक संस्था के रूप में ओएनजीसी के विभिन्न लक्ष्यों के समान ही राजभाषा कार्यान्वयन के लक्ष्यों की पूर्ति में भी, राजमहेन्द्री परिसंपत्ति अग्रणी साबित होगा। इस महान यज्ञ को अपनी-अपनी रचनाशीलता की आहुतियों से पवित्र करने वाले आप सभी कार्मिकों को मेरी शुभकामनाएं।

आर. पर्सन रामाराव
(आर एस रामाराव)



देवेंद्र पाण्डेय

वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी



संपादक की कलम से.....

हिन्दी, हमारी राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा के रूप में, सम्पूर्ण देश को एक सूत्र में पिरोने की अद्वितीय क्षमता रखती है। राजकीय कार्यों में हिन्दी का प्रयोग, न केवल प्रशासनिक दक्षता में वृद्धि करता है, बल्कि हमारे सांस्कृतिक मूल्यों और राष्ट्रीय एकता को भी सुदृढ़ करता है।

मुझे राजमहेंद्री परिसंपत्ति की ई-हिन्दी गृह पत्रिका 'गोदावरी' का यह अंक आपके सामने प्रस्तुत करते हुए, अत्यन्त हर्ष एवं गर्व का अनुभव हो रहा है। यह पत्रिका न केवल हमारी भाषायी अभिरुचि एवं सांस्कृतिक चेतना का द्योतक है, अपितु सहकर्मियों की रचनात्मकता, साहित्यिक अभिव्यक्ति एवं ज्ञान-संवर्धन के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का भी उत्कृष्ट उदाहरण है।

इस पत्रिका के माध्यम से हमारे सहकर्मी साहित्य, कला, संस्कृति, तकनीकी एवं विविध विषयों पर अपने विचार एवं अनुभव साझा कर रहे हैं, जो कि निःसन्देह पाठकों के ज्ञानवर्धन, दृष्टिकोण विस्तार एवं संवेदनात्मक परिष्कार में सहायक सिद्ध होंगे।

मेरा पूर्ण विश्वास है कि 'गोदावरी' का यह अंक पाठकों के मन में भाषा एवं भावनाओं का अद्वितीय संवाद स्थापित करेगा तथा हिन्दी के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु प्रेरणा का स्रोत बनेगा।

मैं पुनः उन सभी का हार्दिक धन्यवाद करता हूँ, जिन्होंने इस पत्रिका के सम्पूर्ण कलेवर को अपनी रचनात्मकता के योगदान से सँवारा और समृद्ध किया है। साथ ही मेरी आशा है, कि इस प्रयास को आप सभी पाठकों का आशीर्वाद और प्रोत्साहन प्राप्त होगा, ताकि भविष्य में हम और अधिक सुदृढ़ और सशक्त इच्छाशक्ति के साथ राजभाषा हिन्दी की सेवा में समर्पित हो सकें।

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय का संदेश.....	00
निदेशक (मानव संसाधन) महोदय का संदेश.....	00
कार्यकारी निदेशक-परिसंपत्ति प्रबन्धक महोदय का संदेश.....	00
प्रधान-मानव संसाधन का संदेश.....	00
संपादक की कलम से.....	00
ड्यूटी, गोल्फ और स्वास्थ्य : एक परस्पर जुड़ी यात्रा..... ग्यास उद्दीन	00
एसेट हाउस..... ज्योति मित्रा	00
निर्भया..... भरत सिंह	00
काँवड़ यात्रा..... श्वेता मिश्रा	00
कर पाऊँगा या नहीं..... नितिन गोयल	00
महिला सशक्तिकरण..... प्रियंका प्रियदर्शिनी	00
भ्रष्टाचार..... करुणा श्रीवास्तव	00
अपनी हिन्दी..... मो. सूफियान	00
मेरी केरल यात्रा..... गंगा भवानी	00
भारत के शहीद..... प्रेमलता	00
केदारनाथ की पहली झलक..... ज्योति मित्रा	00
बिना विचारे जो करे, सो पाछे पछताए..... करुणा श्रीवास्तव	00
हिन्दी दिवस..... एन मनोजा	00
चार दोस्त..... एन तन्विता श्री	00
तेरे नाम की ये कविता..... प्रीतम घोष	00
अखंड भारत के सूत्रधार : लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल..... प्रियंका प्रियदर्शिनी	00
सत्यनिष्ठा का महत्व..... रश्मि मिल्की	00
सफलता किसे कहते हैं..... एस सी मिश्रा	00
मेरी मनाली यात्रा..... प्रियंका प्रियदर्शिनी	00
इंसानियत की तस्वीर..... सौरभ चक्रवर्ती	00
माँ का जादू..... सौमिता डे	00
श्रीमान् विल्सन..... एस सी मिश्रा	00
हिन्दी की परिभाषा..... प्रियंका प्रियदर्शिनी	00
उम्र का प्रभाव..... सौरभ चक्रवर्ती	00
साया..... शिवा सिंह	00
श्रीशैलम की यात्रा..... सुष्मिता मुखर्जी	00
स्वी सुरक्षा : महत प्रश्न..... श्वेता साही	00
रांची का छोरा..... उत्कर्ष भारद्वाज	00
ठंडी शाम..... शिव सिंह	00
इंसान का धर्म..... सौरभ चक्रवर्ती	00
हनुमान बाग चाय सम्पदा (एस्टेट)..... मधुकर मिल्की	00
हिन्दी हमारी अस्मिता, हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा..... राजश्री मजुमदार	00



ज्यूटी दीन प्रबंधक (सुरक्षा)

ज्यूटी, गोल्फ और स्वास्थ्य: एक परस्पर जुड़ी यात्रा

हर कार्मिक की हार्दिक अभिलाषा रहती है कि वह अपने ज्यूटी कार्यस्थल पर तत्परता से कार्य, परिवार के साथ आनन्दित पारिवारिक जीवन, अपने जीवन में किसी एक खेल में महारथ और जीवन में अधिकतर समय बेहतर स्वास्थ्य के साथ जीना।

राजामुंद्री परिसम्पत्ति का बेस कोम्प्लेक्स ज्यूटी करने के साथ साथ विभिन्न प्रकार कि क्रीड़ा गतिविधियों में अपने आप को व्यस्त रखकर एक बेहतर जीवन जीने का ओएनजीसी में उत्तम स्थान है।

हमारे आधुनिक समाज में, ज्यूटी, गोल्फ और स्वास्थ्य जैसी अवधारणाएँ शुरू में असंगत लग सकती हैं। हालाँकि, जब एक व्यापक लेंस के माध्यम से देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि ये सब जटिलता से जुड़े हुए हैं। हमारे जीविकोपार्जन के लिए ज्यूटी और शारीरिक गतिविधि के लिए गोल्फ (खेल) की भूमिका हमारी नैतिक जिम्मेदारी बन जाती है, जो व्यक्तियों को संतुलित और पूर्ण जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित करती है।

ज्यूटी एक दायित्व है और स्वास्थ्य एक बुनियाद है जिस पर जीवन की गुणवत्ता का निर्माण होता है। किसी के स्वास्थ्य को बनाए रखने का मतलब केवल बीमारी को रोकना नहीं है, बल्कि दीर्घायु और जीवन शक्ति सुनिश्चित करना भी है।

शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के पथ के रूप में गोल्फ

गोल्फ, जिसे अक्सर एक आरामदायक गतिविधि या सामाजिक शानो-शौकृत के रूप में देखा जाता है, कई स्वास्थ्य लाभ प्रदान करता है जो खेल के आनंद से अलग हैं। हालाँकि गोल्फ, दौड़ या बास्केटबॉल जैसे खेलों की तरह तेज नहीं हो सकती हैं, लेकिन यह कम प्रभाव वाली शारीरिक गतिविधि और मानसिक फोकस का एक अनूठा संगम है। अपने शारीरिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के इच्छुक व्यक्तियों के लिए, गोल्फ नियमित व्यायाम करने का एक सौम्य लेकिन प्रभावी तरीका है।

पूरे १८-होल कोर्स पर चलना, जो ४ से ६ मील तक हो सकता है, हृदय संबंधी लाभ प्रदान करता है, यह निरंतर गति परिसंचरण में सुधार करती है, हृदय को मजबूत करती है और वजन को नियंत्रित करने में मदद करती है। इसके अतिरिक्त, गोल्फ क्लब घुमाने से शरीर के ऊपरी हिस्से की मांसपेशियां काम करती हैं, जिससे ताकत और लचीलेपन में सुधार होता है। गोल्फ स्विंग में शामिल धूर्णी गति मुद्रा और संतुलन को बेहतर बनाने में मदद कर सकती है, जो समग्र शारीरिक स्वास्थ्य के प्रमुख घटक हैं।

शारीरिक लाभों के अलावा, गोल्फ पर्याप्त मानसिक स्वास्थ्य लाभ भी प्रदान करता है। गोल्फ एकाग्रता, धैर्य और सचेतनता को प्रोत्साहित करता है। स्विंग द्वारा ध्यान केंद्रित करने, खेल के उतार-चढ़ाव को समझने से मानसिक तनाव कम करने में मदद मिलती है। प्रकृति से आच्छादित, गोल्फ कोर्स का शांत वातावरण मानसिक आराम का एहसास दिलाता है। गोल्फ खिलाड़ी बताते हैं कि कोर्स पर बिताया गया समय पूर्ण सांसारिक विमुक्तता का आभास करता है, जिससे उन्हें दिमाग को आराम करने और मानसिक निर्णयों में स्पष्टता मिलती है। इसके अलावा गोल्फ के सामाजिक पहलू जिसमें मैत्रीपूर्ण प्रतिस्पर्धा या आकस्मिक बातचीत के माध्यम से भी अकेलेपन की भावना कम होती है, पारस्परिक संबंधों में बढ़ोतरी और आत्मिक खुशी का संचरण होता है।

निष्कर्ष: ज्यूटी, गोल्फ और स्वास्थ्य का तालमेल

ज्यूटी, गोल्फ और स्वास्थ्य के बीच परस्पर सामंजस्य एक उच्च कोटि के संबंध प्रतिस्थापित करती है जो व्यक्तियों को जिम्मेदारी और कल्याण की जीवन शैली अपनाने के लिए प्रोत्साहित करती है। किसी के भी उत्तम स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए ज्यूटी के साथ साथ आवश्यक शारीरिक गतिविधि (खेल) में सक्रिय भागीदारी अति महत्वपूर्ण है। गोल्फ इस अभिलाषा को पूरा करने के लिए एक अनूठा एवमउचित अवसर प्रदान करता है। गोल्फ में शारीरिक व्यायाम, मानसिक फोकस और सामाजिक संपर्क का संयोजन स्वास्थ्य के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करता है।

एक अच्छा स्वास्थ्य, एक अच्छा खेल।

ज्यूटी के साथ जीवन का एक उत्तम मेल।



ज्योति मित्रा पत्नी - मनीष कर्मा अधीक्षक अभियंता (सेमेन्टिंग)

"Asset house"

खाली दिल, खाली हाथ लिए यादों से भरा Asset house रखा है।
पैरों के पुराने निशां वो चौकीदार आज पोंछ रहा है ॥
नीले अंडों वाली चिड़िया ये बोल के उड़ चली कि...
मेरा परिंदा आज कहाँ है ?

Java apple की भौंहे चिंता में गई सिकुड़,
जब पूछा -आज की कहो कुछ...
तब आम का पेढ़ बोला - वो गए, कभी ना आने के लिए,
मैंने खुद उन्हें बात करते सुना है ॥

घर का नौकर हर कोने में कुछ ढूँढ रहा है,
शायद दिल का वो टुकड़ा ...
जो मालिक उसके लिए छोड़ गया है ॥

बाहर पीले रंग के वो लकड़ी के टुकड़े उदास बैठे हैं,
जिनको चाय की प्यालियों ने अलविदा कहा है।

हरी दूब भी छिपा रही है अपने सीने को,
जिसमें कोई बड़ा दिलवाला छाप छोड़ गया है ॥

आज इस मकान से हाथों के पकवानों की खुशबू नहीं...
तो हवा के रूख ने भी जाने से मना कर दिया है ॥

Asset house की दीवारें चुपचाप आंसू पोंछ रही हैं
कि कैसे खुद को संभालूँ.....ये सोच रही हैं...
जिनको मालिक ने प्यार, दुलार और ममता से सींच दिया है ॥
थोड़ा तो वक्त लगेगा ही इस परंपरा को समझने में,
कि, परिंदा पंख फैलाए...
कहीं और के लिए उड़ गया है ॥



भारत सिंह अधीक्षक रसायनज

निर्भया

निर्भया के बाद भी
निर्भीक घूमते हैं
नित नया आखेट
ये गलीच ढूँढते हैं।
किसी का इनको भय नहीं
किसी की इनको शह सही
दुःशासन सा साहस है
दुर्योधन का अद्वाहस है।

है कुंद क्यूँ कानून
क्षीण विधि का विधान है !
न्याय-पालिका में क्यों ?
धृतराष्ट्र विद्यमान है
गांधारी सी एक मूरत है
अबला खुद वह नारी है
झुका हुआ तराजू
किसका यह हितकारी है ?

हरण पर वो दण्ड हो
फिर ना कोई उद्दण्ड हो
अपराध ज्यों जघन्य हो
न्याय उदाहरण भी अदम्य हो।

ना फिर किसी की अस्मिता हैवानियत का शिकार हो
ना पुनः किसी द्रौपदी पर प्रहार हो

ना हो प्रतीत कुंद ये वज्र विधि का
चल कोई दूसरा दधीच ढूँढते हैं
निर्भया के बाद भी निर्भीक घूमते हैं
नित नया आखेट, ये गलीच ढूँढते हैं।



श्रेता मिश्रा (पत्नी), एस सी मिश्रा मुख्य अभियंता, वेधन

काँवड़ यात्रा

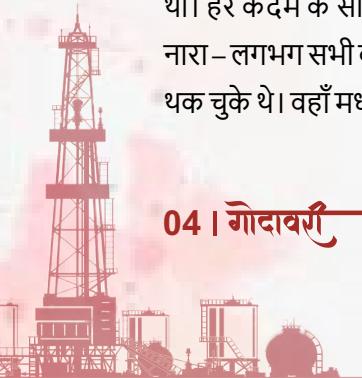
जीवन में सुविधाओं की कोई कमी नहीं और नित नए आविष्कार, सुलभताओं को और अधिक बढ़ाने में प्रयत्नशील हैं। लोगों को इन सुविधाओं की ऐसी आदत हो गई है, मानो ये मानव-सभ्यता का सदा से अभिन्न अंग रहे हों। हर वर्ष लाखों श्रद्धालु इस मिथ्या जीवन को त्याग सत्य की अनुभूति करने तीर्थ यात्रा कर देव दर्शन को जाते हैं। मनुष्य चाहे कहीं भी रहे, किसी भी धर्म को माने, पर ईश्वर के प्रति उसकी श्रद्धा और विश्वास विकसित और विकासशील देशों में एक सी है। शिक्षित-अशिक्षित, गरीब-अमीर सभी को ईश्वर-भक्ति एक श्रेणी में ले आती है।

आज करीब १३ वर्ष हो गए और काँवड़-यात्रा की स्मृतियाँ मेरे हृदय में वैसी ही हैं जैसे ये बस कल ही की बात हो। मेरे माता-पिता ईश्वर-भक्ति को मनुष्य का परम कर्तव्य समझते हैं और यथा शक्ति भक्ति में उनका असीम विश्वास है। मैं उन दिनों कॉलेज में पढ़ती थी, परीक्षा कुछ ही दिनों में होने वाली थी। मेरे माता-पिता काँवड़-यात्रा का विचार कर रहे थे। जिस दिन शाम को उनके प्रश्नान की योजना थी, मेरा मन भी कॉलेज में न लगा। अनुपस्थिति पत्र अस्पताल-अधीक्षक को देकर मैं आधे दिन की छुट्टी में ही घर आ गई और साथ जाना तय कर, तैयारियों में लग गई।

शाम के समय हमारा प्रस्थान अपनी निजी कार से हुआ। दरभंगा से सुल्तानगंज की १९८ कि.मी की दूरी लगभग ६ घंटों में तय की गई। भोजन और कुछ घंटों के विश्राम के बाद हम गंगा घाट पहुँचे। सुल्तानगंज काँवड़ियों से भरा हुआ गेरुए रंग की चादर सा लग रहा था। रात-दिन वहाँ काँवड़ियों की चहल-पहल रहती है। सावन की गंगा पूरी तरह घाट के ऊपर तक आ पहुँची थी। घाट के पुजारियों की भीड़, काँवड़ियों का ताँता और बोल-बम के नारे से मन-मस्तिष्क में जबरदस्त जोश और उत्साह का संचार कर दिया। स्नान-पूजा के बाद काँवड़ धारण करते ही उत्साह चौगुना हो गया। इस तरह बोल-बम का नारा लगाते हुए सूर्योदय से पहले ही हमारी यात्रा प्रारंभ हो गई। देवघर १०५ कि.मी की काँवड़ यात्रा का संकल्प कर सभी काँवड़ियों ने यात्रा शुरू की।

जैसे-जैसे सूर्य देव दिन होने की घोषणा करते हुए विकराल रूप धारण करने लगे, तपती सड़क के कंकड़ पैरों को विदीर्ण करने लगे। मन का उत्साह वातावरण की गर्मी से कुछ ठंडा होता जान पड़ा। ८-१० कि.मी की पक्की सड़क का रास्ता तो कुछ कष्टप्रद था, पर कच्ची सड़क शुरू होने से राहत का अनुभव हुआ। सड़कों के किनारे बड़े-बड़े पेड़ चलने पर कड़ी धूप से बचाते साथ ही रुक कर आराम करने के लिए भी उपयुक्त थे। आधे दिन की यात्रा के बाद, कुछ खाने और विश्राम के लिए हम असरगंज में एक पुराने शिव मंदिर में रुके। मंदिर का प्रांगण काफी बड़ा था, शायद यात्री विश्राम के लिए ही बनवाया गया हो। वहाँ से करीब ११ कि.मी दूर तारापुर की एक धर्मशाला में रात्री विश्राम के लिए रुके। इस तरह पहले दिन की यात्रा समाप्त हुई।

अगली सुबह स्नान-पूजा कर हमने प्रस्थान किया आगे की यात्रा के लिए। रास्ते की मुश्किलें बढ़ती जा रही थीं पर दूरी घटती जा रही थी। हर कदम के साथ हम बाबा के करीब हो रहे थे। हल्की-हल्की बारिश, पथरीले रास्ते, पाँव में छाले और होंठों पर बोल-बम का नारा - लगभग सभी काँवड़ियों का यही दृश्य था। १८ कि.मी की दूरी तय कर सब कुमरसार पहुँचे, वहाँ पहुँचते-पहुँचते ज्यादातर लोग थक चुके थे। वहाँ मध्याह्न विश्राम कर सभी कुमरसार नदी पार करने निकले। नदी बरसात में कुछ भरी-भरी थी, लोग आधे-आधे ढूबे



पानी का आनंद ले रहे थे। बच्चे अपने माता-पिता के कंधों पर बैठ कर नदी पार कर रहे थे। बहुत ही मनोरम दृश्य था। यदि की पानी ने सभी को नए उत्साह और ताजगी से भर दिया। आगे जिलेबिया की घुमावदार पहाड़ियों को पार कर वहाँ धर्मशाला में रात्री विश्राम के लिए रुके।

अगली सुबह की शुरुआत बारिश की फुहार, नुकीले पथर और सुईया पहाड़ से हुई। अद्भुत अनुभव था वह। सुईया से १३ कि.मी पर काँवड़िया पहुँचे, वहाँ काँवड़िया धर्मशाला में सभी झूमते-नाचते हुए भोले के भक्ति-गीत में मग्न थे। समय वहाँ कैसे बीता कुछ पता ही न चला। काँवड़िया से चलकर ८ कि.मी पर झरावन पहुँचते-पहुँचते रात हो गई। वहाँ पड़ाव दाल कर हम अगली सुबह अंतिम दिन की यात्रा के लिए उत्सुकता से प्रतीक्षा करने लगे।

चौथे और अंतिम दिन की यात्रा झरावन से शुरू कर हम गोड़ियारी पहुँचे। गोड़ियारी नदी ने अंतिम दिन की यात्रा का जोश और बढ़ा दिया। गोड़ियारी से कलकतिया पहुँचते-पहुँचते धूप कुछ अधिक तेज हो गई, पर आज धूप या बारिश किसी में भी काँवड़ियों की गति को धीमा करने की क्षमता न थी। सभी धुन लगाए आगे बढ़े जा रहे थे। आवाज और दिनों से कुछ अधिक ही तेज थी और कदम भी। दर्शनिया जब पहुँचे और बाबा के मंदिर का त्रिशूल दूर से ही दिखने लगा, तो खुशी और उत्साह की सीमा न रही। १ कि.मी तो पालक झपकते तय हो गया। जैसे बाबा के मंदिर पहुँचे, भक्तों का सैलाब उमड़ा हुआ था, उसी सैलाब में हम भी बह गए।

परिक्रमा करते हुए पाँव जमीन पर पड़ ही नहीं रहे थे, मन में उड़ने की अनुभूति हो रही थी। उस केसरी भीड़ में बहते मंदिर में नारे लगाते पहुँचे। आह! इतने कष्ट, पाँव के छाले, शरीर की थकान सब कहीं लोप हो गए। नई स्फूर्ति, नई उमंग ने मन, शरीर, आत्मा को हर तरफ से भर दिया। मन के भाव शब्द के मोहताज न रहे, आँखों के रास्ते अश्रु बनकर निरंतर बाबा के अभिषेक को आतुर थे। जलाभिषेक कर मन ने सब प्राप्त कर लिया। आत्मा तृप्त हो गई। जैसे किसी आत्मीय को देख शब्द निरर्थक हो जाते हैं, केवल अश्रु आत्मा की तृप्ति को सार्थक करता है। किसी तीर्थ के जल से अधिक पवित्र वो आँसू थे जो मन के सच्चे भाव से महारुद्र के चरणों को पखार रहे थे। यही भक्ति और प्रेम की पराकाष्ठा है, जो शब्द या विचार के अधीन नहीं, मौन साधना है।

अगली सुबह घर वापसी के लिए रवाना हुए, मन-मस्तिष्क में मगवत्-दर्शन की सुखद स्मृतियाँ लिए।

बोल-बम। हर हर महादेव।





नितिन गोयल कार्यकारी अभियंता, (आगार)

कर पाऊँगा या नहीं

कर पाऊँगा या नहीं,
सोचा बहुत पर डर लगता है,
कि कर पाऊँगा या नहीं।
आशाएं बहुत हैं पर डर लगता है,
कि पूरा कर पाऊँगा या नहीं।
हिम्मत है, अपनों का साथ है
और थोड़ा विश्वास भी, पर डर लगता है,
सबकी उम्मीदों पर खरा
उतार पाऊँगा या नहीं।

हर सुबह माला जपता हूँ।
हर देवी देवता का नाम लेता हूँ।
हर टोटका और थोड़ा जुगाड़ भी लगाता हूँ।
पर जब भी मम्मी-पापा की इच्छाओं में
उनके शब्दों से निकली हर दुआओं में
अपना ही नाम सुनता हूँ, तो डर लगता है,
कि उनकी आँखों को वो खुशी दे पाऊँगा या नहीं।

कैसे करूँ, क्या करूँ,
ये करूँ या वो करूँ,
उसने जैसा किया वैसा करूँ,
या खुद से कुछ करूँ।
हर रात इसी ख्याल में काटा करता हूँ।
पर डर लगता है, कि सुबह उठँगा तो
जो सोच वो पूरा कर पाऊँगा या नहीं।

मम्मी हर दिन किस्सा सुनाती हैं।
पड़ोस के लड़के का गुणगान गाती हैं।
पर वो ये समझ नहीं पाती है
कि उनके लाल पर क्या बीती जाती है।

और डर लगता है जब मम्मी
वैसा ही मुझसे करने की आस लगाती है।
उस खास की आस को पूरा कर पाऊँगा या नहीं।

पापा रोज काम से आते हैं
और एक ही सवाल पूछते हैं।
पढ़ाई सही से हो पाती है?
कोई तकलीफ कोई समस्या आती है ?
पर कैसे बताऊँ उनकी की समस्या है
और ऐसी है जो समझ में तो आती है
पर किसिको समझाई नहीं जाती है।
बस यहीं आकर घबराता हूँ
कि इन सवालों के जवाब दे पाऊँगा या नहीं।

एक सवाल फिर और पनपता है।
जो मैं सफल हो गया एक बार
फिर आगे और ज्यादा कर पाऊँगा या नहीं,
फिर आगे और अच्छा कर पाऊँगा या नहीं,
खुदकों हर दौड़ में साबित कर पाऊँगा या नहीं।
एक बात यहीं समझ में आई अब तक
कि दर-दर में दौड़ तो जाऊँगा अभी,
लोगों की उम्मीद पूरी करने बहुत कुछ कर जाऊँगा
अभी,
पर जो खुशियां छोड़ रहा अभी,
जो वक्त मैं किताब के साथ बाँट रहा अभी,
क्या फिर काभी उड़ पाऊँगा या नहीं।
क्या काभी बेफिक्र मुस्कुरा पाऊँगा या नहीं।
क्या वही मस्ती भरी दौड़ लगा पाऊँगा या नहीं।
क्या काभी घुटन भरी जिंदगी में,
चैन की एक एक सांस ले पाऊँगा या नहीं।



प्रियंका प्रियदर्शिनी पत्नी, अळण देबार्थीष, मुख्य भूविज्ञानी

महिला सशक्तिकरण

आज के आधुनिक युग में महिला सशक्तिकरण एक विशेष चर्चा का विषय है। हमारे आदि-ग्रंथों में नारी के महत्व को मानते हुए, यहाँ तक बताया गया है कि “यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः”, अर्थात् जहाँ नारी की पूजा हटी है, वहाँ देवता निवास करते हैं। पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा कहा गया मशहूर वाक्य “लोगों को जगाने के लिए, महिलाओं का जागृत होना जरूरी है।” एक बार जब वो अपना कदम उठा लेती हैं, परिवार आगे बढ़ता है, गाँव आगे बढ़ता है और राष्ट्र विकास की ओर उन्मुख होता है।

लेकिन विडंबना तो देखिए नारी में इतनी शक्ति होने के बावजूद भी उसके सशक्तिकरण की अत्यंत आवश्यकता महसूस हो रही है। भारत में उच्च स्तर की लैंगिक असमानता है, जहाँ महिलाएँ अपने परिवार के साथ ही बाहरी समाज के भी बुरे बर्ताव से पीड़ित हैं। अपने देश में अनपढ़ों की संख्या में महिलाएँ सबसे अव्वल हैं। भारत में, महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए सबसे पहले समाज में उनके अधिकारों और मूल्यों को मारने वाली उन सभी राक्षसी सोच को मारना जरूरी है, जैसे – दहेज प्रथा, अशिक्षा, यौन हिंसा, असमानता, भूष्ण हत्या, महिलाओं के प्रति घेरेलू हिंसा, वैश्यावृत्ति, मानव तस्करी और ऐसे ही दूसरे विषय। नारी सशक्तिकरण का असली अर्थ तब समझ में आएगा जब भारत में उन्हें अच्छी शिक्षा दी जाएगी और उन्हें इस काबिल बनाया जाएगा कि वे हर क्षेत्र में स्वतंत्र होकर फैसले कर सकें।

स्त्री को सृजन की शक्ति माना जाता है, अर्थात् स्त्री से ही मानव जाति का अस्तित्व माना गया है। इस सृजन की शक्ति को विकसित-परिष्कृत कर उसे सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक न्याय, विचार, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, अवसर की समानता का सुअवसर प्रदान करना ही नारी सशक्तिकरण का आशय है।

भारत में महिला सशक्तिकरण के बहुत से कारण सामने आते हैं:

1. शिक्षा के मामले में भारत में महिलाएँ पुरुषों की अपेक्षा काफी पीछे हैं। भारत में पुरुषों की शिक्षा दर ८२.३ प्रतिशत है, जबकि महिलाओं की दर मात्र ६०.६ प्रतिशत ही है।
2. हमारे भारत में आज भी शहरी महिलाओं की तुलना में ग्रामीण महिलाएँ अपने घरों में बंद रहने के लिए बाध्य हैं, और उन्हें सामान्य स्वास्थ्य सुविधा और शिक्षा जैसी सुविधाएँ भी उपलब्ध नहीं हैं।
3. हमारे देश में आंकड़ों के अनुसार भारत के शहरों में सॉफ्टवेयर इंडस्ट्री में लगभग ३० प्रतिशत महिलाएँ कार्य करती हैं, वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग ९० फीसदी महिलाएँ मुख्यतः कृषि और इससे जुड़े क्षेत्रों में दैनिक मजदूरी करती हैं।
4. हमारा देश काफी तेजी और उत्साह के साथ आगे बढ़ता जा राह है, लेकिन इसे हम तभी बरकारार रख सकते हैं, जब हम लैंगिक असमानता को दूर कर पाएँ और महिलाओं के लिए भी पुरुषों की तरह समान शिक्षा, तरकी और भुगतान सुनिश्चित कर सकें।
5. भारतीय समाज में महिलाओं को सम्मान देने के लिए माँ, बहन, पुत्री, पत्नी के रूप में महिला देवियों के पूजन की परंपरा है, लेकिन आज केवल यह एक ढोंग मात्र रह गया है।



6. पिछले कुछ वर्षों में महिलाओं के खिलाफ होने वाले लैंगिक असमानता और बुरी प्रथाओं को हटाने के लिए सरकार द्वारा कई सारे संवैधानिक और कानूनी अधिकार बनाए और लागू किए गए हैं।
7. आधुनिक समाज महिलाओं के अधिकार को लेकर ज्यादा जागरूक है, जिसका परिणाम हुआ कि कई सारे स्वयं-सेवी समूह और एनजीओ आदि इस दिशा में कार्य कर रहे हैं।
8. महिलाएँ ज्यादा खुले दिमाग की होकर हर क्षेत्र में अपने अधिकारों को पाने के लिए सामाजिक बंधनों को तोड़ रही हैं। हालाँकि अपराध इसके साथ-साथ चल रहे हैं।

भारत में महिला सशक्तिकरण के मार्ग में आने वाली बाधाएँ:

1. सामाजिक मापदंड: पुरानी और रूढ़िवादी विचारधाराओं के कारण भारत के कई सारे क्षेत्रों में महिलाओं के घर छोड़ने पर पाबंदी होती है। इस तरह के क्षेत्रों में महिलाओं को शिक्षा या फिर रोजगार के लिए घर से बाहर जाने के लिए आज़ादी नहीं होती है। इस कारण महिलाएँ खुद को पुरुषों से कमतर समझने लगती हैं।
2. कार्यक्षेत्र में शारीरिक शोषण: निजी कार्यक्षेत्र जैसी कि सेवा उद्योग, सॉफ्टवेयर उद्योग, अस्पताल और शैक्षिक संस्थाएँ, इस समस्या से सबसे ज्यादा प्रभावित होते हैं। पिछले उछ समय में कार्यक्षेत्रों में महिलाओं के साथ होने वाले उत्तीर्ण में काफी तेजी से वृद्धि हुई है और पिछले कुछ दशकों में लगभग १७० प्रतिशत वृद्धि देखने को मिली है।
3. लैंगिक भेदभाव: भारत में अभी भी कार्यस्थलों पर महिलाओं के साथ लैंगिक स्तर पर काफी भेदभाव किया जाता है। इसके साथ ही उन्हें आज़ादीपूर्वक कार्य करने या परिवार से जुड़े फैसले लेने की भी आज़ादी नहीं होती है और उन्हें सदैव हर कार्य में पुरुषों की अपेक्षा कमजोर ही माना जाता है।
4. भुगतान में असमानता: भारत में महिलाओं को अपने पुरुष समकक्षों की अपेक्षा कम भुगतान किया जाता है और असंगठित क्षेत्रों में यह समस्या और भी ज्यादा दयनीय है। खासतौर से मजदूरी वाले जगहों पर तो यह सबसे बदतर है। समान कार्य को समान समय तक करने के बावजूद भी महिलाओं को पुरुषों की अपेक्षा काफी काम भुगतान किया जाता है। महिलाओं को अपने पुरुष समकक्षों की तरह समान अनुभव और योग्यता होने के बावजूद पुरुषों की अपेक्षा काम भुगतान किया जाता है।
5. अशिक्षा: महिलाओं में अशिक्षा और बीच में पढ़ाई छोड़ने जैसी समस्याएँ भी महिला सशक्तिकरण में काफी बड़ी बाधाएँ हैं। भारत में महिला शिक्षा दर ६४.६ प्रतिशत है, जबकि पुरुषों की शिक्षा दर ८०.९ प्रतिशत है। काफी सारी ग्रामीण लड़कियाँ जो स्कूल जाती भी हैं, उनकी पढ़ाई भी बीच में ही छूट जाती है और वह दसरीं कक्षा भी नहीं पास कर पाती हैं।
6. बाल विवाह: हालाँकि पिछले कुछ दशकों में सरकार द्वारा लिए गए प्रभावी फैसलों से भारत में बाल विवाह जैसी कुरीति को काफी हद तक कम कर दिया है लेकिन, २०२१ में यूनिसेफ की एक रिपोर्ट से पता चला है कि भारत में अब भी हर वर्ष लगभग १५ लाख लड़कियों की शादी १८ वर्ष से पहले ही कर दी जाती है। जल्द शादी हो जाने के कारण महिलाओं का विकास रुक जाता है और वह शारीरिक तथा मानसिक रूप से वयस्क नहीं हो पाती हैं।
7. महिलाओं के विरुद्ध होने वाले अपराध: भारतीय महिलाओं के विरुद्ध कई सारे घरेलू हिंसा के साथ दहेज, ऑनर किलिंग और तस्करी जैसे गंभीर अपराध देखने को मिलते हैं। यहाँ तक कि कामकाजी महिलाएँ भी देर रात में अपनी सुरक्षा को देखते हुए सार्वजनिक परिवहन का उपयोग नहीं करती हैं। सही मायनों में महिला सशक्तिकरण की प्राप्ति तभी की जा सकती है, जब महिलाओं की सुरक्षा को सुनिश्चित किया जा सके और पुरुषों की तरह वह भी बिना भय के स्वच्छ रूप से कहीं भी आ-जा सके।

8. कन्या भूषण-हत्या: भारत में कन्या भूषण-हत्या सबसे बड़ी बाधाओं में से एक है महिला सशक्तिकरण के रास्ते में। कन्या भूषण-हत्या का अर्थ लिंग के आधार पर होने वाली भूषण-हत्या से है, जिसके अंतर्गत कन्या भूषण का पता चलने पर बिना माँ की सहमति के ही गर्भपात करा दिया जाता है। हमारे महिला सशक्तिकरण के यह दावे तब तक नहीं पूरे होंगे जब तक हम कन्या भूषण हत्या की समस्या को मिटा नहीं पाएंगे।

भारत में महिला सशक्तिकरण के लिए सरकार की भूमिका:

भारत सरकार द्वारा महिला सशक्तिकरण के लिए कई सारे योजनाएँ चलाई जाती हैं। महिला एवं बाल विकास कल्याण मंत्रालय और भारत सरकार द्वारा भारतीय महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए कई सारी योजनाएँ चलाई जा रही हैं-

1. बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना
2. माइल हेल्पलाइन योजना
3. उज्ज्वला योजना
4. सपोर्ट टू ट्रेनिंग एंड एम्प्लॉयमेन्ट प्रोग्राम फॉर विमेन
5. महिला शक्ति केंद्र
6. पंचायती राज योजनाओं में महिलाओं के लिए आरक्षण।

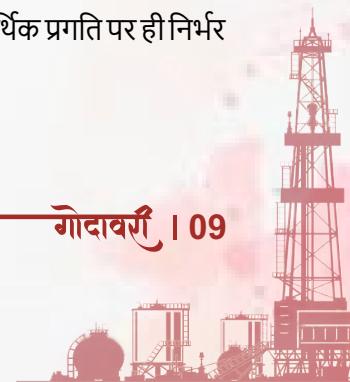
संसद द्वारा महिला सशक्तिकरण के लिए पास किए गए कुछ अधिनियम:

कानूनी अधिकार के साथ महिलाओं को सशक्ति बनाने के लिए संसद द्वारा भी कुछ अधिनियम पास किए गए हैं-

1. अनैतिक व्यापार अधिनियम (१९५६)
2. दहेज रोक अधिनियम (१९६२)
3. समान पारिश्रमिक अधिनियम (१९७६)
4. मेडिकल टर्मिनेशन ऑफ प्रेग्नेंसी एक्ट (१९८७)
5. लिंग परीक्षण तकनीक एक्ट (१९९४)
6. बाल विवाह रोकथाम एक्ट (२००६)
7. कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन शोषण एक्ट (२०२३)

उपसंहार: जिस तरह से भारत सबसे तेजी से आर्थिक तरक्की प्राप्त करने वाले देशों में शुमार हुआ है, उसे देखते हुए निकट भविष्य में भारत को महिला सशक्तिकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने पर भी ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। यह बहुत आवश्यक है कि हम महिलाओं के विरुद्ध पुरानी सोच को बदलें और संवैधानिक तथा कानूनी प्रावधानों में भी बदलाव लाए जाएँ।

भले ही आज के समाज में कई भारतीय महिलाएँ राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, प्रशासनिक अधिकारी, डॉक्टर, वकील बन चुकी हो, लेकिन अभी काफी सारी महिलाओं को आज भी सहयोग और सहायता की आवश्यकता है। उन्हें शिक्षा और आजादीपूर्वक कार्य करने, सुरक्षित यात्रा, सुरक्षित कार्य और सामाजिक आज़ादी में अभी भी सहयोग की आवश्यकता है। महिला सशक्तिकरण का यह कार्य काफी महत्वपूर्ण है, क्योंकि भारत की सामाजिक-आर्थिक प्रगति उसकी महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक प्रगति पर ही निर्भर करती है।





कंचना श्रीवास्तव प्रोग्रामिंग अधिकारी

भ्रष्टाचार

देश के नौजवानों कुछ कर दिखाओ,
देश की नैया डूब रही है, इसको पार लगाओ।
आज देश में तरह-तरह के होते हैं अत्याचार,
पढ़े-लिखे व्यक्ति भी फिरते हैं बेकार।
क्योंकि हर दफ्तर में भ्रष्टाचार का लगा है पहरा।
अयोग्य कर्मचारियों का अधिकतर बना हुआ है डेरा।
आज योग्यता के बल पर नहीं मिलती नौकरी,
आज तो पैसा ही बना हुआ है योग्यता।

पैसे के बलपर अयोग्य व्यक्ति बन जाता है अफसर,
और योग्य व्यक्ति को नहीं मिल पाता उचित अवसर।
बेकारी का इसीलिए देश में बोलबाला है,
ओएनजीसी को छोड़कर अन्य सभी क्षेत्रों में भ्रष्टाचार का बोलबाला है।
अब हमको शपथ लेनी होगी,
धन देकर या लेकर किसी अयोग्य व्यक्ति को तरजीह नहीं देनी होगी।
हम सब हाथ मिलाएं तो भ्रष्टाचार नहीं पनप सकेगा,
और हर योग्य व्यक्ति गैरव के साथ कार्य पा सकेगा।



मोहम्मद सूफियान पुत्र, ज्यासु दीन, प्रैबन्धक (सुरक्षा)

अपनी हिन्दी

ऑफिस, घर या हो बाजार
हिन्दी में होते सारे काज।

कंप्यूटर भी हिन्दी जाने,
बस तू ही एक दूरी ठाने।

नहीं ज़रा सी मेहनत लगती,
हिन्दी जब है दिल में बसती।

छोटी सी शुरुआत है करनी,
फिर हिन्दी चुपचाप है बहनी।

अपनी भाषा में जो दम है,
विदेशी में काफी कम है।

कर ले अब हिन्दी में काम,
फूल स्टॉप से पूर्ण विराम।

हिन्दी-दिवस को सफल बनालो,
बचे-खुचे भी हिन्दी अपनालो।



गंगा भवानी (पत्नी) एन हेविंट कुमार, वरिष्ठ अभियांत्रिकी सहायक (इलेक्ट्रॉनिक्स)

मेरी केरल यात्रा

केरल: ईश्वर का अपना देश

यह कहानी है मेरी केरल यात्रा की, जिसे अक्सर "गॉड्स ओन कंट्री" कहा जाता है। केरल जाने का सपना मैंने बहुत पहले देखा था, और आखिरकार वह दिन आ ही गया जब मैं इस सुंदर प्रदेश की ओर निकल पड़ा।

यात्रा की शुरुआत:

जब मैंने केरल की यात्रा का प्लान बनाया, तो मुझे इस बात का अहसास था कि यह एक अलग ही दुनिया है – नारियल के पेड़ों से घिरा, बैकवॉटर से सजा और संस्कृति से समृद्ध। मेरी फ्लाइट कोच्चि हवाई अड्डे पर उतरी, और हवाई अड्डे से बाहर निकलते ही ठंडी, ताजगी भरी हवा ने मेरा स्वागत किया।

सड़कें साफ-सुधरी और हरियाली से भरपूर थीं। मुझे यह अहसास होने लगा कि यह जगह प्रकृति से बेहद जुड़ी हुई है। सबसे पहले, मैंने कोच्चि शहर घूमने का फैसला किया। यहाँ की पुरानी गलियों में घूमते हुए मैंने वहाँ के पुर्तगाली और डच वास्तुकला का अनुदृत संगम देखा। फोर्ट कोच्चि और यहूदी सिनेगॉग के ऐतिहासिक स्थल, समुद्र तट पर चीनी मछली पकड़ने वाले जाल, सभी ने मेरे मन पर गहरा प्रभाव छोड़ा।

मुत्रार की हरियाली में खो जाना:

कोच्चि से निकालने के बाद मेरी यात्रा का अगला पड़ाव था मुत्रार। यह पहाड़ी स्थल चाय बागानों और ठंडी हवाओं के लिए प्रसिद्ध है। जैसे-जैसे मैं मुत्रार की ओर बढ़ा, सड़क के दोनों ओर फैले चाय के हरे-भरे बागानों ने मेरी आँखों को सुकून दिया। ऐसा लग रहा था जैसे किसी चित्रकार ने पूरी धरती को हरे रंग में रंग दिया हो।

मैंने एक छोटे से होमस्टे में ठहरने का फैसला किया, जहाँ से चाय बागान का शानदार दृश्य दिखाई देता था। सुबह की ताजगी और चाय की सुगंध में एक अलग ही शांति थी। मैंने मुत्रार की एरावीकुलम नेशनल पार्क में ट्रेकिंग का भी आनंद लिया, जहाँ दुर्लभ नीलगिरी नहर और सुंदर अनाइमुडी चोटी का दृश्य देखने को मिला।

अल्लेप्पी के बैकवॉटर का अनुभव:

केरल की यात्रा बिना बैकवॉटर का अनुभव किए अधूरी मानी जाती है, और इसी सोच के साथ मैंने अल्लेप्पी का रुख किया। याहान के हाउसबोट्स पूरी दुनिया में प्रसिद्ध हैं, और मैं इसे देखने के लिए बेहद उत्सुक था। मैंने एक हाउसबोट बुक किया और जैसे ही यह शांत बैकवॉटर की लहरों पर तैरने लगा, मुझे एक असीम शांति का अहसास हुआ। नारियाल के पेड़ों के बीच, पानी की धीमी आवाज और दूर-दूर तक फैला नीला आसमान – यह अनुभव शब्दों में बयान करना मुश्किल है। बैकवॉटर के बीच मैंने स्थानीय गाँवों को देखा, जहाँ के लोग नावों से एक ओर से दूसरी ओर जाते हैं। उनकी सादगी और जीवनशैली ने मुझे गहरे तक प्रभावित किया।

थेकडी और आयुर्वेदिक स्पा:

मेरी अगली मंजिल थी थेकडी, जो अपने जंगलों और वन्य जीवन के लिए प्रसिद्ध है। मैंने यहाँ के पेरियार वन्यजीव अभ्यारण्य में एक सफारी का अनुभव किया, जहाँ हाथी, बाघ और अन्य जीव-जन्तु देखने को मिले। इसके अलावा, यहाँ की झील में नाव की सवारी करते हुए पक्षियों की चहचहाहट सुनना बहुत ही सुकून भरा था।

केरल आयुर्वेद के लिए भी प्रसिद्ध है, और मैंने यहाँ एक आयुर्वेदिक स्पा का अनुभव किया। इसकी उपचारक मालिश ने न केवल मेरे शरीर को आराम दिया, बल्कि मेरे मन को भी शांति प्रदान की। ऐसा लगा जैसे मेरी सारी थकान उड़ गई हो।

वापसी:

केरल की इस यात्रा ने मुझे जीवन के सरल और प्राकृतिक पहलुओं के महत्व को समझाया। यहाँ की संस्कृति, प्राकृतिक सौन्दर्य और सादगी ने मेरे दिल में एक खास जगह बना ली। जब मेरी वापसी की फ्लाइट ने उड़ान भरी, तो मैंने आसमान से केरल के नारियाल के पेड़ों और झीलों को देखा। मन में एक ही ख्याल था कि मैं जल्द ही इस जगह दोबारा आऊँगा। केरल की यह यात्रा मेरे लिए सिर्फ एक घूमने का अनुभव नहीं थी, यह एक आत्मिक और शारीरिक रूप से पुनर्जीवित करने वाला सफर था। ईश्वर के इस देश में बिताया हर पल मेरे जीवन का अमूल्य हिस्सा बन चुका है।



प्रेमलता माता, कछुणा श्रीवास्तव, प्रोग्रामिंग अधिकारी

भारत के शहीद

किसने खाई सीने पर गोली,

किसने खाई फाँसी।

यह जान नहीं सके,

भारत के देशवासी।

कैसे भूल गए यह, कि काभी सही थी गुलामी,

यहीं पर माँ-बहनों की इज्जत की हुई नीलामी।

यहीं लड़ी थी वीरांगना, बहादुर रानी लक्ष्मी बाई,

यह जान नहीं सके,

भारत के देशवासी।

यहीं हुए हैं वीर शिवाजी और राणा प्रताप जी।

यहीं हुए हैं चाचा नेहरू और महात्मा गांधी जी।

किसने खाई सीने पर गोली,

किसने खाई फाँसी।

यह जान नहीं सके,

भारत के देशवासी।

वीरगति का कोई धर्म और वेश नहीं होता,

उनका लक्ष्य देश रक्षा करना ही है होता।

अपने जीते-जी शत्रु को देश में न आने देते,

रक्षा करते-करते अपने प्राणों को हँसकर हैं बलिदान करते।

किसने खाई सीने पर गोली,

किसने खाई फाँसी।

यह जान न सके,

भारत के देशवासी।



ज्योति मित्रा पट्टी - मनीष वर्मा, अधीक्षक अभियंता (सेमेन्टिंग)

केदारनाथ की पहली झलक

सन् 2012 की बात है, हमने तय किया कि हम इस गर्भी की छुट्टियों में चार धामों में केदारनाथ धाम के दर्शन करेंगे। पहले यमुनोत्री फिर गंगोत्री फिर केदारनाथ जाएंगे क्योंकि बचपन से पत्र-पत्रिकाओं व बड़े-बुजुर्गों के माध्यम से बाबा केदारनाथ के बारे में सुना व पढ़ा था। दुर्गम व पहाड़ी रास्ता, बर्फली चोटियां बिन समय बरसात, ऊपर से कंपकपाती ठंड।

पर मुझे लगा बिना बुलावे के कोई वहां तक नहीं पहुंच पाता।

उत्तराखण्ड राज्य के रुद्रप्रयाग जिले की पर्वत श्रृंखला में बाबा शिव का धाम केदारनाथ १२ ज्योतिर्लिंगों में से एक है। कल - कल बहती मंदाकिनी नदी के तट पर स्थित केदारनाथ का भव्य एवं आकर्षक मंदिर ग्रेनाइट शिलाखंडों से निर्मित है।

हमने अपनी यात्रा गौरीकुंड से आरंभ की, केदारनाथ के लिए गौरीकुंड की यात्रा १४ किलोमीटर थी। हालांकि ऊपर जाने के लिए खच्चर आदि की सुविधा भी दी पर हमने पैदल दर्शन का निर्णय लिया।

वहां बहुत से प्रदेश के तहत अलग-अलग आश्रम बने हैं जो जिस प्रदेश का है उस हिसाब से कमरा ले सकता है। ये इसलिए ऐसा है क्योंकि किसी को भाषा, भोजन आदि की परेशानी से जूझना न पड़े।

चुकीं हम उत्तर प्रदेश के निवासी हैं, तो हमने वैसा ही आश्रम लिया। वहाँ उन्होंने पूरे भाव से हमारी सुविधाओं का ध्यान दिया। गर्म पानी से लेकर गर्म भोजन इत्यादि।

ठंड बढ़ गई थी तो खाना खाकर हम सोने चले गए। सुबह उठकर हमने यात्रा प्रारंभ की, पथरीले, चिकने रास्ते ऊपर से धीमी-धीमी बारिश जो चढ़ाई को और मुश्किल बना रही थी। शुरुआत में चढ़ाई करना मुश्किल था पर थोड़ी देर में प्रवाह बन गया था। रास्ते में छोटे-छोटे ढाबों की सुविधा थी जहां रुक कर कुछ खा-पी सकते थे।

केदारनाथ का सुंदर दृश्य मन को बहुत लुभा रहा था। ऊंचे-ऊंचे पर्वत से पतली-पतली नदी की धाराएं बह रही थी। ऐसा लगता था मानो शिव की जटाएं फैली हुई हैं। इतना मनोरम दृश्य देख कर ऐसा लगता मानो शिव अपने केशों को पर्वत पर फैलाकर सुखा रहे हों। चारों ओर हरे देवदार के पेड़ अलग सुंदरता बढ़ा रहे थे।

चढ़ते-चढ़ते हिम्मत जवाब दे रही थी। ७ किलोमीटर आने के बाद हमने रामबाड़ा पे थोड़ा विश्राम किया। लगभग आधे घंटे के बाद ७ किलोमीटर की यात्रा अभी भी तय करनी बाकी थी, ऊपर पहुंच कर पहली झलक जब मंदिर की दिखी तो ऐसा लगा मानो हमने स्वर्ग के दर्शन कर लिए हों। वहां पहुंच के ऊर्जा बढ़ गई थी, काफी आकर्षक व चौड़ा मंदिर था, पीछे विशाल बर्फ से ढके पर्वत दिखाई दे रहे थे। कल्पूरी शैली में बना यह सुंदर पाण्डव कालीन शिव मंदिर विश्व भर में अनोखा है।

मैं तो उसे निहारती ही रह गई। हमने मंदिर की परिक्रमा ली और भाग्यवश मंदिर के कपाट भी खुले मिले जिससे कि भक्तगण नंदी के समीप जाकर उसके कानों में अपनी इच्छा बताने का मौका मिला। हमारे यहां कहा जाता है कि नंदी के कानों में अपनी इच्छा बोलने से शिव भेले जल्दी पूरी करते हैं। थोड़ी देर मंदिर प्रांगण में बैठने के बाद हमने पास के छोटे से ढाबे में खाना खाया। महज २५० रुपए में हमारा पेट भर गया। पर्वत और नदियों के बीच बैठ कर खाने का आनंद ही अलग था।

खाने के बाद हम कमरे में गए, शाम की आरती के लिए फिर से मंदिर आए और सभी के मंगलकामना के लिए प्रार्थना की और फिर से खाना खाकर सुबह के इंतजार में कमरे में जाकर सो गए। मेरे लिए केदारनाथ की यात्रा कभी न भूलने वाली दिल के सबसे करीब यात्राओं में से एक बन गई थी। क्योंकि तमाम प्रयासों के बाद आखिरकार बाबा केदारनाथ धाम की यात्रा सफल हुई।

उनका प्यार और आशीर्वाद सभी पर सदा बना रहे।





कंचना श्रीवास्तव प्रोग्रामिंग अधिकारी

बिना विचारे जो करे, सो पाछे पछताए

एक नगर में पद्मावती रानी राज्य किया करती थी। वह बहुत पूजा-पाठ करती थी, और गरीबों को दान दिया करती थी। उसने अपने अकेले होने के कारण एक तोता पाल लिया था। उसका नाम उसने हरि रखा, क्योंकि वह हरि-ॐ-हरि का जाप किया करती थी। एक बार ऐसा हुआ कि उसी राज्य में एक सास-बहु रहती थी। बहु अपनी सास को बहुत परेशान किया करती थी। सारे घर का काम करवाती थी, और ठीक से खाने को भी नहीं देती थी। सास इससे हमेशा चिंतित रहा करती थी।

उधर रानी पद्मावती ने जो तोता हरि पाला था, उसने रानी से कहा कि एक आम के बाग में तोतों की महफिल लगी है। मुझे भी वहाँ बुलाया गया है, अगर आप आज्ञा दें तो मैं चला जाऊँ। रानी ने कहा ठीक है, चले जाओ मगर रात होने से पहले चले आना। तोता बोला जो आज्ञा रानी जी। अब अगले दिन तोता चला गया और तोतों के साथ आम के बगीचे में धूमता हुआ बहुत खुशी से तोतों के साथ बैठा। उसने देखा एक पेड़ पर सोने के रंग के चमकीले आम लगे थे। उसे अमर फल कहते हैं, जिसे जो भी खाता था, अमर हो जाता था। तोता ऐसा एक फल अपनी रानी के लिए उपहार में ले आया। रानी ने वह आम आटा पीसने की चक्की के पास रख दिया। पहले आटा घर पर तैयार किया जाता था। अगले दिन रानी का उपवास था, और उसने वह फल उपवास वाले दिन खाने के लिए रख दिया था। मगर रात को रानी ने देखा कि उस चक्की के पास से एक साँप गुज़रा। यह देखकर रानी घबरा गई और बोली यह अमर फल अब बेकार हो गया है। अब यह विष फल बन गया है, क्योंकि इसे साँप ने सूँघ लिया है। इतना कहते ही रानी ने उसे उठाकर महल के पीछे फेंक दिया, और तोते को भी उड़ा दिया। कुछ समय के बाद उस फल का वृक्ष बढ़ा हो गया और उसपर फल आने लगे।

सास अब बहुत बूढ़ी हो गई थी, उससे घर का काम नहीं होता था। एक दिन बहुत परेशान होकर वह अपनी बहु से बोली, ले मैं अब मरी जाती हूँ, तू चैन से रहना। वह रोती हुई, वहाँ से चली गई और आम के पेड़ के नीचे जाकर बैठ गई। सभी लोग अब इस वृक्ष को विष फल का वृक्ष कहते थे। बूढ़ी सास ने उससे एक फल तोड़कर खा लिया। उस फल को खाते ही वह एक बहुत सुंदर स्त्री में परिवर्तित हो गई। उसके बाल सुनहरे, औँखें चमकीली और काया अत्यधिक सुंदर बन गई। उसने स्वयं को देखकर सोचा कि मैंने तो मरने के लिए यह फल खाया था, लेकिन मेरा तो रूप ही बदल गया और आयु भी इतनी कम हो गई। वह तत्काल रानी के पास गई और उसे बताया कि आपने जो फल विष फल समझकर फेंक दिया था, और अपने तोते हरि को भी उड़ा दिया था, उसी फल से पैदा हुए पेड़ का फल खाकर मैं अमर हो गई।

रानी रोने लगी और अपने तोते को यादकर पछताने लगी। कितना वफादार था मेरा हरि, मैंने बिना सोचे-समझे ही उसे उड़ा दिया और फल भी फेंक दिया। इस कहानी की सीख यही है –

बिना विचारे जो करे, सो पाछे पछताए।

काम बिगाड़े अपनो, जग में होत हँसए।।



एन मनोजा पुत्री, एन हरिवंतकुमार, व. अभियांत्रिकी सहायक (विद्युत)

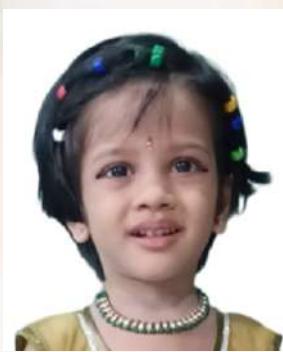
हिन्दी दिवस

हिन्दी है मेरी भाषा,
है मेरे गर्व की परिभाषा।
यह हमारी शान है,
इस पर हमें अभिमान है।

माँ की पहली सीख है,
मेरी पहली जीत है।
आपस में जो सबको जोड़े,
ऐसी प्यारी प्रीत है।

सरल, सुबोध व मीठी है,
सीखने में लचीली है।
सुघड़, व्यवस्थित इतनी है,
स्वर-व्यंजन पृथक घर हैं
फिर भी मिले-जुले सब हैं।

संस्कृत इसकी जननी है,
जो कंप्यूटर की भी संगिनी है।
जैसा लिखा, वैसा पढ़ा हमने
सरलता, स्पष्टता की झलक इसमें।
संस्कृति, सभ्यता की वाहक है,
विदेश में विवेकानन्द का गौरव है।



एन तन्निता श्री पुत्री, एन हथवंतकुमार, व. अभियांत्रिकी सहायक (विद्युत)

चार दोस्त

एक जंगल में चार दोस्त रहते थे। एक हिरण, एक कौआ, एक चूहा और एक कछुआ। चारों में गहरी दोस्ती थी। हर दोपहर, वे एक छायादार बरगद के पेड़ के नीचे मिलते और घंटों बातें करते। एक दिन सामान्य समय पर हिरण वहाँ नहीं पहुँचा। चूहा, कछुआ और कौआ सभी परेशान थे कि चौथा दोस्त क्यों नहीं आया? चूहे ने कौए से कहा तुम उड़ के चारों ओर जंगल में देखकर आओ कि हिरण कहाँ है। कौए ने तुरंत हामी भरी और वो उड़ गया। हिरण को देखने के लिए उसे बहुत दूर नहीं जाना पड़ा। दुर्भाग्य से, हिरण एक शिकारी द्वारा बिछाए गए जाल में फँस गया था। कौआ चिल्लाया, “अरे दोस्त हिरण! क्या हुआ?” हिरण ने चीखते हुए कहा, “मैं आमतौर पर बहुत सावधान रहता हूँ, पर पता नहीं आज कैसे फँस गया।” कौए ने कहा, “मैं कुछ मदद लेकर आता हूँ।”

कौआ उड़ता हुआ बरगद के पेड़ के पास पहुँचा जहाँ चूहा और कछुआ उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। कौए ने उन्हें सब बात बताई। चूहा बोल, दोस्त कछुआ, तुम यहीं रुको। कौए ने अपनी चोंच में चूहे को उठाया और तुरंत उस स्थान पर उड़कर गया जहाँ हिरण फँसा हुआ था। अपने साथियों को देखकर हिरण बहुत खुश हुआ और चूहे ने जल्दी से जाल काट दिया। हिरण अब आज्ञाद था। उतने में पीछे की झाड़ियों से किसी ने आवाज़ दी – लगता है हमारा दोस्त आज्ञाद हो गया। सबने पीछे मुड़कर देखा तो वह कछुआ था। वह भी धीरे-धीरे चलकर वहाँ आ गया था। तभी शिकारी वहाँ आ गया। शिकारी को देखते ही चूहा बिल में घुस गया, हिरण भाग खड़ा हुआ और कौआ उड़ गया। पर कछुआ बहुत धीरे-धीरे चल रहा था। शिकारी को अपने नुकसान पर बहुत गुस्सा आ रहा था, पर तभी उसकी नज़र कछुए पर पड़ी। उसने कछुए को पकड़ लिया। उसने सोच हिरण हाथ से गया तो क्या हुआ, मैं इस कछुए का सूप पी लूँगा। कौआ उदास होकर बोला, “हमने अपना दोस्त खो दिया है!” नहीं, अभी भी उम्मीद है – हिरण ने मुस्कुराते हुए कहा। उसने अपने दो दोस्तों को एक योजना सुनाई। शिकारी अपनी पीठ पर कछुए हो लादे गाँव लौट रहा था। वह रास्ते में एक झील के पास से गुज़रा। उसने देखा की एक मरा हुआ हिरण घास में पड़ा है। एक कौआ हिरण के ऊपर बैठा था, उसकी आँखों में झांक रहा था। शिकारी काफी खुश हुआ। उसने सोचा, मैंने एक हिरण को खो दिया, लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि मैंने दूसरा हिरण पा लिया है! उसे यह भी लगा कि मुझे इसे मारना भी नहीं पड़ा। कछुआ मन ही मन हँस दिया। उसके दोस्त उसकी मदद करने आ चुके हैं। शिकारी घास पर कछुए को छोड़कर हिरण की ओर दौड़ा। तभी चूहा वहाँ आ गया और उसने रस्सी को काटकर कछुए को आज्ञाद कर दिया। कछुआ अब आज्ञाद था। चूहा चिल्लाया, “दोस्त कछुआ, भागो!” कछुआ तेज़ी से चलते हुए सीधे झील में चला गया। इस बीच, शिकारी हिरण को पकड़ने के करीब था। तब तक कछुआ झील में सुरक्षित पहुँच गया। कौआ चिल्लाया – काँव-काँव! और उड़ गया। यह हिरण के लिए एक संदेश था। हिरण अपने पैरों पर उछला और भागा। शिकारी उसे पकड़ नहीं पाया। जब तक वह लौटा, तो उसे पता चला कि कछुआ भी जा चुका है। चारों दोस्त वापस बरगद के पेड़ के पास आ गए। कछुए ने कहा, मेरा जीवन बचाने के लिए धन्यवाद दोस्तों! कोई धन्यवाद नहीं, हिरण ने मुस्कुराते हुए कहा, “जब तक हम एक-दूसरे के साथ हैं, हम हमेशा सुरक्षित रहेंगे।”



प्रीतम घोष वरिष्ठ भूभौतिकविद, (भूतल)

तेरे नाम की ये कविता

तेरे लिए लिखी ये कविता,
 तेरे बिना अधूरी सी है,
 हर लफज में छुपा है प्यार,
 तेरे साथ जीने का यार।

तेरे संग बिताए लम्हे,
 जैसे मीठी यादें हैं।
 हर पल में बसेरा है तेरा,
 हर खेयायाब में तेरी बातें हैं।

तेरे बिना ये आँखें हैं सूनी,
 तेरे बिना ये दिल है बेजान,
 तेरे संग जीने का जज्बा,
 ज़िंदगी की है ये शान।

तू ही मेरा रक्षक,
 तू ही मेरी पहचान,
 तेरे बिना सब अधूरा,
 तेरे साथ सब है आसान।





प्रियंका प्रियदर्शिनी पत्नी, अळण देबाशीष, मुख्य भूविज्ञानी

अखंड भारत के सूत्रधार : लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल

देश के बंटवारे के आधार पर मिली स्वतंत्रता के पश्चात की उथल-पुथल में जो भारतीय एकता के प्रतीक बनकर उभरे, एक प्रखर देशभक्त जिन्होंने ब्रिटिश राज के अंत के बाद ५६२ रियासतों को एक सूत्र में पिरोया, एक महान प्रशासक जिन्होंने लहों से छलनी भारत को स्थिर किया, उन महान लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल का जन्म ३१ अक्टूबर १८७५ को गुजरात में हुआ था। देशभक्ति तो वल्लभभाई के रक्त में बहती थी। उनके पिता झंबेरभाई ने १८५७ में रानी झांसी के समर्थन में युद्ध किया था और माँ लाडोबाई रानी झांसी की वीरगाथा गाया करथी थीं। अपने गाँव में कक्षा चार तक की प्रारम्भिक शिक्षा लेने के पश्चात आगे की पढ़ाई के लिए बालक वल्लभ पेटलाद गाँव के एक विद्यालय जाने लगे, जो उनके मूल गाँव से छह से साथ किमी की दूरी पर था। पढ़ाई में विशेष रुचि के कारण वल्लभभाई पटेल को उनकी निनिहाल में रखा गया, जहाँ उन्होंने दसवीं उत्तीर्ण किया। यहाँ से उनके व्यक्तित्व का बहुमुखी विकास प्रारंभ हुआ, किन्तु वल्लभभाई की आगे की शिक्षा आर्थिक कष्टों में हुई। इसके बावजूद, उन्होंने इंग्लैंड से बैरिस्टर की परीक्षा उत्तीर्ण की। वे पढ़ाई में तो तेज थे ही, संगीत व खेलकूद में भी उनकी रुचि थी तथा उनमें एक ऐसा जादू था कि वे अपने साथियों के बीच स्कूल के दिनों में ही बेहद लोकप्रिय हो गए थे। वे साथी छात्रों का नेतृत्व करने लग गए थे। पटेल स्वयं बहुत ही कुशाग्र बुद्धि के थे, तथा उनमें सीखने की अद्भुत क्षमता थी। बचपन में एक बार वो स्कूल से आते समय पीछे छूट गए। कुछ साथियों ने जाकर देखा तो वे धरती पर गड़े एक नुकीले पत्थर को उखाड़ रहे थे। पूछने पर बोले, "इसने मुझे चोट पहुँचाई है, अब मैं इसे उखाड़कर ही मानूँगा।" और वे काम पूरा करके ही घर आए। उनके बाल्यकाल की बहादुरी के संस्मरण उल्लिखित की जाते हैं। एक बार उनकी बगल में फोड़ा निकल आया। उन दिनों गाँवों में इसके लिए लोहे की सलाख को लालकर उससे फोड़े को दाग दिया जाता था। सलाख को भट्टी में रखकर गरम तो कर लिया, पर वल्लभभाई जैसे छोटे बालक को दागने की हिम्मत नहीं पड़ी। इस पर वल्लभभाई ने सलाख अपने हाथ में लेकर उसे फोड़े में घुसा दिया। आसपास बैठे लोग चीख पड़े लेकिन उनके मुँह से उफ तक नहीं निकली।

१९२६ में उनकी भेंट गांधीजी से हुई और वे स्वाधीनता आंदोलन में कूद पड़े। स्वतंत्रता आंदोलन में कूदने के बाद वे स्वदेशी जीवन शैली में आ गए। बारडोली में किसान आंदोलन का सफल नेतृत्व करने के कारण उनका नाम 'सरदार' पड़ा। सरदार पटेल स्पष्ट एवं निर्भीक वक्ता थे। यदि वे कभी गांधीजी से असहमत होते तो वे उन्हें भी साफ कह देते थे। वे कई बार जेल गए। १९४२ में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान उन्हें तीन साल की कैद हुई। सरदार वल्लभभाई पटेल प्रधानमंत्री पद के सर्वथा योग्य थे, किन्तु अन्यान्य कारणों से वह अवसर नेहरू जी को मिल गया। वल्लभभाई नेरहरु मंत्री-परिषद में गृहमंत्री बने। सरदार पटेल ने चार वर्ष तक गृहमंत्री के पद पर कार्य किया। यह चार वर्ष स्वाधीन भारत के ऐतिहासिक वर्ष माने जा सकते हैं। सरदार पटेल जी ने ५६२ रियासतों का विलय करवाया जिसमें सबसे कठिन विलय जूनागढ़ और हैदराबाद का रहा। सरदार की प्रेरणा से ही जूनागढ़ में विद्रोह हुआ और वह भारत में मिल गया। हैदराबाद में बड़ी पुलिस कार्रवाई करनी पड़ी। जम्मू-कश्मीर का मामला नेहरू जी ने अपने पास रखा जो आज भी अनसुलझा है। संभव है यदि कश्मीर का मुद्दा भी पटेल जी के हाथ में रहता तो आज भारत आतंकवाद की समस्या से न जूझ रहा होता। वल्लभभाई समय के अनुसार निर्णय लेने में सक्षम थे। वे तत्कालीन प्रधानमंत्री नेहरू को समय-समय पर परामर्श भी दिया करते थे।

जब चीन तिब्बत पर अपना अधिकार जता रहा था, नेहरू जी तत्कालीन चीन नेतृत्व के प्रति काफी उदार थे। तब भी सरदार पटेल ने चीन के प्रति सर्वाधिक संदेह प्रकट करते हुए कहा था कि यदि चीन तिब्बत पर अधिकार कर लेता है तो यह भविष्य में भारत की सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरा होगा। आज सरदार वल्लभभाई पटेल की चिंता सच साबित हो रही है। चूँकि भारत के एकीकरण में सरदार पटेल जी का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण था, इसलिए उन्हें भारत का लौह पुरुष कहा गया। १५ दिसंबर १९५० को उनकी मृत्यु हो गई और यह लौह पुरुष दुनिया को अलविदा कह गए। सरदार वल्लभभाई जी भले ही पहले प्रधानमंत्री नया रहे हों, लेकिन वे अखंड भारत के जनक हमेशा रहेंगे।



राटिमे मिल्की पत्नी, श्री मधुकर मिल्की मुख्य भौमिकीविज

सत्यनिष्ठा का महत्व

ऋषिवन नामक एक वन में सिंहराज का शासन था। अपने परिवार के साथ सिंहराज वन के मध्य में एक बड़ी सी गुफा में निवास करते थे। अपने नाम के अनुकूल सिंहराज पुराने खुर्राट थे। प्रजा पर कड़ा शासन और भारी मात्रा में साप्ताहिक कर वसूलना उनके शासन शैली की विशेषता थी।

वन्य जीव नियमित रूप से खाने-पीने के साथ अन्य सामग्री राजकोष में जमा कराया करते थे। इस कार्य का उत्तरदायित्व भेड़ियालाल और सियारचंद नमक मंत्रियों और उनके दल पर था।

सियार और भेड़िए के स्वभाव से तो सब भलीभाँति परिचित हैं। अपने स्वाभाव के अनुरूप वे दोनों बहुत धूर्त, लोभी और अत्यंत निर्दर्यी थे। राजकोष के बहाने प्रजा से मनमाना कर वसूला जाता था और सभी अधर्मी, कपटी और लोभी कर्मचारी उस सामग्री का बड़ा हिस्सा आपस में बाँट लिया करते थे। अपने मंत्रियों के इन क्रिया-कलापों का राजा सिंहराज को किंचित ज्ञान तो था पर सत्ता के मद में चूर और अपनी कोई भौतिक हानि का अनुभव न करने के कारण उसने इस घोर अत्यचार की ओर से अपनी आँखें मूँद रखी थीं, या ऐसा कहें की सियारचंद और भेड़ियालाल ने अपनी चाटुकारिता की चादर से सिंहराज के चक्षुओं पर मायाजाल का पर्दा डाल रखा था।

ऋषिवन में ही गजनाथ नामक एक बहुत ही विद्वान् और ज्ञानी हाथी रहता था। वह वन्य जीवों को शिक्षित करना और स्वावलम्बी बनाना चाहता था। महाराज की दृष्टि एक दिन गजनाथ पर पड़ी। उन्होंने गजनाथ की शिक्षा और बुद्धिमता का परिचय लिया और अत्यंत प्रभावित हुए। गजनाथ को शीघ्र ही राज्य मंत्रिमंडल में नियुक्त कर लिया गया। चाटुकारों के साथ-साथ राजा शिक्षा और शिक्षित वर्ग को भी बहुत महत्व दिया करते थे। उन्हें यह ज्ञान था की राजकाज और राजनीति शिक्षित सभासदों के आभाव में नहीं चल सकती।

पद सँभालते ही गजनाथ ने बही खातों की देखरेख शुरू की और पात्रता और देयता के अनुसार कर वसूलना शुरू किया। गजनाथ की इस कार्यशैली से प्रजाजनों की जान में जान आ गयी। गजनाथ सरकारी नियमों के अलावा एक कण भी अतिरिक्त कर नहीं वसूलते थे। इतना ही नहीं, प्रजा में अगर कोई प्राणी कर चुकाने में असमर्थ हो तो उसे सरकारी सहायता भी प्रदान की जाने लगी। प्रजा खुशहाल रहने लगी और गजनाथ का गुणगान होने लगा। इस बदलाव से भेड़ियालाल और सियारचंद अत्यंत दुखी, क्रोधित और कुंठित रहने लगे। उनकी अनुचित कर्माई बंद हो गयी थी और प्रजाजनों में उनका भय समाप्त होने लगा था। इस कारण गजनाथ पर उन दोनों अधर्मियों की त्योरियाँ चढ़ने लगी। दोनों ने महाराज के कान भरने शुरू किये की राजकोष दान दक्षिणा में ही एक दिन धन से रिक्त हो जायेगा। आखिरकार उन दोनों के विवश करने पर एक दिन महाराज ने गजनाथ को पदच्युत कर के राज्य से निष्कासित कर दिया।

समय बीत चला और राजा सिंहराज की शारीरिक स्थिति बिगड़ने लगी। बीमारियाँ सर चढ़ कर बोलने लगी। दुर्बलता के इस दौर में राजा ने अपने चारों तरफ देखा तो चारों ओर कपटी और लोभी ही दिखाई पड़ रहे थे जो राजकोष और सिंहासन पर दांत गड़ाए बैठे थे। सिंहराज को अपने समीप एक भी विश्वासपात्र नहीं दिखा। राजा को अब अपने राज्य और परिवार के भविष्य और सुरक्षा की चिंता सताने लगी। इस परिस्थिति में आने का बाद राजा को गजनाथ और उसकी सत्यनिष्ठा का मूल्य पता चला। राजा को ज्ञात हो चुका था



की प्रजा और उनके परिवार की रक्षा अब गजनाथ ही कर सकते हैं। राजा ने अपने परिवार को पास बुलाया और धीरे से कहा की गजनाथ को संदेसा भेज दिया गया है और उन्हें यह पूर्ण विश्वास है कि वे आकर प्रजा और परिवार का पालन एवं रक्षण करेंगे।

सियारचंद और भेड़ियालाल जैसे छलिये राजा की आँखें बंद होने की बाट जोह रहे थे कि सहसा ही चिंघाड़ते हुए गजनाथ ने प्रवेश किया। शारीरिक बल के साथ-साथ सत्यता और निष्ठा का आत्मविश्वास उसके मुखपटल पर साक्षात् सुशोभित हो रहा था। गजनाथ के लौट आने से प्रजा में भी एक अभूतपूर्व ऊर्जा का संचार होने लगा था। सब गजनाथ की जय-जयकार करने लगे। सिंहराज ने भी संतुष्टि और राहत की एक लम्बी सांस ली और प्रजा के साथ-साथ अपने परिवार का उत्तरदायित्व गजनाथ के हाथों में सौंप कर यमधाम की ओर प्रस्थान किया।

सियारचंद और भेड़ियालाल ने भी प्रजा और गजनाथ का आत्मविश्वास देख कर नौ दो ग्यारह होने में ही अपनी भलाई समझी। इस प्रकार एक योग्य, गुणी और शिक्षित शासक के संरक्षण में ऋषिवन पुनः विकास की ओर चल पड़ा।

सार: हम मनुष्यों को भी अपने समाज में रह रहे सियारचंदों और भेड़ियालालों को चिह्नित करने और उनसे समाज की रक्षा करते हुआ गुणी, शिक्षित और निष्ठावान व्यक्तियों को उचित सम्मान देना चाहिए। धर्म, जाति और वर्ण से ऊपर उठकर ही हम एक सशक्त और सक्षम राष्ट्र के निर्माण में सहयोगी हो सकते हैं।



एस सी मिश्रा मुख्य अभियंता, वेधन

सफलता किसे कहते हैं?

ये सफलता आखिर किसे कहते हैं?

सौ साल जीने को, या खूब धन कमाने को;

माता-पिता से सेह पाने को, या जन-कल्याण हेतु त्याग को;

दूसरों से सम्मान पाने को, या आत्मसम्मान की रक्षा करने को;

ये सफलता आखिर किसे कहते हैं?

ऊँचा पद पाने को, या संतोष की अनुभूति को;

अच्छा जीवन साथी पाने को, या भाई-बहन के साथ को;

बच्चों का भविष्य बनाने को, या कर्तव्य पथ पर चलने को;

ये सफलता आखिर किसे कहते हैं?

दफ्तर में सभी को खुश रखने को, या जमीर का साथ देने को;

लोगों में नाम कमाने को, या वास्तविकता का साथ निभाने को;

रोते-रोते जीवन आगे बढ़ाने को, या हँसते हुए मौत को अपनाने को;

ये सफलता आखिर किसे कहते हैं?



प्रियंका प्रियदर्शिनी पत्नी, अळण देबार्थीष, मुख्य भूविज्ञानी

मेरी मनाली यात्रा

भारत में प्राकृतिक सुंदरता का ज़िक्र जब आता है, तक कुल्लू-मनाली का नाम अवश्य लिया जाता है। एक तरफ हिमाचल प्रदेश आस्था के केंद्र के रूप में जाना जाता है, वहाँ दूसरी ओर अपनी प्राकृतिक छटा के लिए भी यह विश्व विख्यात है। यहाँ की कुल्लू घाटी और मनाली का जवाब नहीं। सैलानियों का स्वर्ग कहलाने वाली इन जगहों में वे सारी खूबियाँ हैं, जो किसी मनभावन पर्यटन स्थल में होनी चाहिए। हिमाच्छादित पर्वत शिकार, हरी-भरी घाटियाँ, कल-कल बहती निर्मल नदियाँ और विभिन्न झीलों को देखना किसी सम्मोहन से कम नहीं है।

आगरा, मथुरा, चंडीगढ़, मनाली, रोहतांग के साथ साल २०१७ की छुट्टियों का मौसम व्यतीत हुआ। ४५ डिग्री से ८ डिग्री तक जाने का अनुभव भी बहुत ज्यादा अच्छा था। आगरा की चिलचिलाती धूप में ताजमहल की चमक देखी। संसार के अजूबों में शामिल ताजमहल भी प्रेम की एक मिसाल के रूप में जाना जाता है। मथुरा की शाम में कान्हा जी की जन्म आरती का आनंद लिया, बाल रूप की सज्जा देखी। कंस का महल देखा और कंस की पत्नी की समाधि देखी। विश्राम घाट के दर्शन किए, नाविक के कहे अनुसार यहाँ कंस-वध के बाद कृष्ण ने विश्राम लिया था। यह शहर भी ऐतिहासिक है और हमेशा स्मरणीय बना रहेगा।

दिल्ली में एक रात विश्राम लेकर, फिर चंडीगढ़ को रवाना हुए। चंडीगढ़ में एक शाम सोहना झील के किनारे बीती, फिर मेरी सबसे पसंदीदा जगह मनाली और कुल्लू के लिए हम आगे बढ़े। 'हिम' जिसके 'ऑँचल' में बसत है, हमें भी वहाँ ३ रातें और २ दिन गुज़ारने का मौका मिला। हल्की ठंड हमेशा ही माहौल में बनी हुई थी। पहले हम कुल्लू में घूमने निकले। कुल्लू घाटी के बारे में कहा जाता है कि इसके पहले यह कुलंतापीठ के नामसे जाना जाता है, जिसका शाब्दिक अर्थ है रहने योग्य अंतिम स्थान। हिमाचल के कुल्लू का उल्लेख रामायण, महाभारत, विष्णु पुराण जैसे महान भारतीय ग्रंथों में भी आया है।

इसके बाद हम सब मनाली की निराली सुंदरता भरी वादियों में पहुँचे। मनाली का नाम मनु (मानव जाती के कथित पिता) के आवास स्थान के कारण पड़ा। किंवदंती है कि मनु ने अपने आवास के लिए एक ऐसा पर्यावरण चुना जो प्रत्येक दृष्टिकोण से मनोरम था। उसे ही आज मनाली के रूप में जाना जाता है। यहाँ सर्दियों में ३ फीट तक बर्फ जम जाती है। इसी वजह से सैलानी मई, जून में यहाँ ज्यादा संख्या में आते हैं। यहाँ एक तरफ नागर के बीचों-बीच बहती व्यास नदी मन को बहुत लुभाती है, वहाँ दूसरी तरफ हरे घास के मैदान और सेब के बागान देख कर मन खुद को रोक नहीं पाता। मैं इतने सारे सेब के पेड़ पहली बार देख रही थी, और इसी उत्सुकता में मैं कई सारे लाल-हरे सेब सीधे पेड़ से ही तोड़ लिए।

आगे हम हिंडिंबा देवी मंदिर गए। सन् १५५३ ई. में बना हिंडिंबा देवी का यह मंदिर अत्यंत प्राचीन है जहाँ घटोल्कच की माँ और भाम की पत्नी हिंडिंबा को यहाँ शक्ति के रूप में पूजा जाता है। साथ ही ४०० एकड़ में फैला दुंगरी वन विहार भी हमने देखा, जहाँ हिमालय की रखवाली में तैनात चीड़ के पेड़ बहुत लंबे और गहने जंगलों में सैकड़ों सालों का इतिहास बताते हैं। फिर हम हिमाचल की देव भूमि में वशिष्ठ ऋषि के आश्रम का दर्शन करने निकल पड़े। वहाँ हमने गरम पानी के कुंड में थकान दूर की, और भगवान राम के मंदिर के दर्शन किए। वहाँ के पुजारी ने हमें बताया कि भीतर के काले पत्थर से बना मंदिर का हिस्सा २००० साल पुराना है।

फिर अगली सुबह हम रोहतांग पास के लिए निकले। हम मनाली से बस पकड़कर रोहतांग के लिए रवाना हुए। घाटी का वह रास्ता बहुत खतरनाक होते हुए भी रोमांच से भरपूर था। यह रास्ता १३००० फीट की ऊँचाई पर था। यहाँ ठंड इतनी ज्यादा थी कि उससे राहत के लिए सरकारी आदेश पर भारी-भरकम गरम कपड़े मात्र रु.२५०/- प्रति व्यक्ति की दर से प्रदान किए जा रहे थे। भीड़ इतनी थी कि घाटी पर ऊपर जा चुकी गाड़ियाँ नीचे से ऐसी लग रही थीं जैसे लोहे के कॉकरोच चल रहे हों। हमारी बस रोहतांग के रास्ते में एक ढाबे पर रुकी जहाँ हमने चाय और चने का मज़ा लिया। ढाबे वाले ने बताया कि १५ नवंबर के बाद यह रास्ता बंद हो जाता है, और आस-पास का सारा इलाका बर्फ का मैदान बन जाता है। फिर हम बस में चलते हुए, दूर से दिखने वाले बर्फीले पहाड़ों के बीच आ गए। ठंड अब अहसास कराने लगी थी, लेकिन जोश के आगे हम सब उससे भी लड़ने को तैयार थे।

बस से उतरकर हम सफेद ठंडे बर्फीले पहाड़ों के बीच सड़क के दोनों ओर दौड़ने लगे। सड़क के किनारों पर पिघलती बर्फ बदलते आकार ले रही थी। पहाड़ों से गिरता पानी आगे जाकर झरने का का रूप ले रहा था। ऐसे मनोरम दृश्य की सुंदरता को शब्दों में व्यक्त करना संभव नहीं है। हम वहाँ बर्फ के पहाड़ों में लगभग २ घंटे तक मस्ती करते रहे। हमने ढेरों तस्वीरें लीं और खूब खेले, और फिर भी वहाँ से निकलने को मन नहीं मान रहा था। पर धीरे-धीरे ठंड का असर भी बढ़ता जा रहा था। कुछ और मोटे-गरम कपड़े पहनकर हम वापस लौटने लगे। लौटते हुए भी निगाहें लगातार पहाड़ी और घुमावदार रास्तों का आनंद मन में समेट लेने को आतुर थीं।

जैसे आरोह के बाद अवरोह आता है, वैसे ही प्राकृतिक सौन्दर्य दर्शन भी अपने अंतिम चरण की ओर आ गया था। पिछले कुछ दिन कैसे बीत गए पता ही नहीं चला। हिमाचल की धरती को नमन करते हुए हम मनाली से वापस चल पड़े। वास्तव में ये जगह सौभाग्यशाली है और यहाँ बसे लोगों को आशीर्वाद प्राप्त है। इसी आशीर्वाद का कुछ अंश लेकर, हम इस यादगार यात्रा को पूरा कर लौटे।





सौरभ चक्रवर्ती कार्यकारी अभियंता (इलेक्ट्रॉनिक्स)

इंसानियत की तस्वीर

अभी तो तू बस पानी की एक बूँद है,
तुझे तो अभी समंदर बनना है।
तू तो अभी है बस हवा का एक झोंका,
तुझे तो अभी बवंडर बनना है।

अभी तो तू बस एक चिंगारी है,
तुझे तो अभी आग का दरिया बनना है।
अपना पेट तो हर कोई भर लेता है,
तुझे तो भूखे के निवाले का ज़रिया बनना है।

अपनों की हिफाज़त तो करते ही हैं सब,
कमज़ोर की ढाल बने, तुझे ऐसा बलवान बनना है।
अपने सुख में तो सब खुशियाँ मनाते हैं,
तुझे तो किसी रोते हुए के चेहरे की मुस्कान बनना है।

अपने सौभाग्य पे तो सब कर ही लेते हैं गर्व,
तुझे तो किसी अभाग की तकदीर बनना है।
दूसरों की थोड़ी मदद करके ना कर लेना तू घमंड,
तुझे तो अभी कर्ण जैसा दानवीर बनना है।
बहुत से दायित्वों के साथ हुआ है मनुष्य योनि में तेरा जन्म,
तुझे तो अभी इंसानियत की तस्वीर बनना है।



सौमिता डे (पत्नी), प्रीतम घोष, वरिष्ठ भूभौतिकविद (भूतल)

माँ का जादू

माँ का जादू, एक रहस्य,
हर पल में बसा है प्यार,
तेरी हँसी की गूँज से,
हर दर्द हो जाता बेकार।

तेरे साथ में बिताए लम्हे,
जैसे बहारों की मीठी छाया,
तेरी गोद की वो खुशबू
हर मुश्किल में दे सुखद साया।

जब तू संग हो मेरे,
हर रात हो जैसे उजाला,
तेरी आँखों में बसा है,
मेरे सपनों का ये उजाला।

माँ, तू है मेरी प्रेरणा,
तेरे बिना सब कुछ है अधूरा,
तेरे बिना ये जीवन,
जैसे बिना सूरज का सवेरा।



एस सी मिश्रा मुख्य अभियंता, वेधन

श्रीमान् विल्सन

यूँ तो श्रीमान् विल्सन एक सभ्य मध्यवर्गीय पुरुष थे, परंतु महंगे सिगार की लत उन्हें कभी-कभी छोटे-मोटे हाथ मारने पर मजबूर कर देती, जिसे कदाचित वो बुरा न समझते थे। जब कभी कोई खाली, सूनसान घर दिखता, वे स्वतः ही उस ओर खिंचे चले जाते। ये उनकी सिगार की चाहत ही थी जो उनकी लगन को और पक्का करती जाती थी। श्रीमान् इस बात के लिए ईश्वर के प्रति कृतज्ञ भी थे कि उनकी लगन से उपजे इस विशेष गुण ने उन्हें हवालात की हवा न खिलाई। इतने वर्षों के कठिन अभ्यास ने उन्हें बड़े-बड़े शातिरों से भी आगे पहुँचा दिया था।

एक दिन सुबह की सैर करते हुए उनकी नज़र ऐसे ही एक खाली मकान पर पड़ी। उसे देखने से लग रहा था, वहाँ महीनों से कोई नहीं आया। उनकी बाँछे खिल गई और कदम खुद-ब-खुद उस ओर बढ़ चले। जीवन के सारे तजुर्बे का निचोड़, उनकी जेब में पड़ा चाबियों का गुच्छा और कलाकार उँगलियाँ, अपने-अपने किरदार निभाने को मानो बेताब हो रहे थे। वो उस घर की तरफ ऐसे बढ़े चले जा रहे थे, मानो सालों की जान-पहचान हो; जैसे सिंह अपनी स्वाभाविक चाल से शिकार की ओर बढ़ता है।

उनके आंतरिक उत्साह का वेग प्रबल किन्तु क्षणिक था। जैसे ही उन्होंने पीछे की दीवार से छलांग मारी, मानो धधकती दावाग्नि में वर्ष की फुहार पड़ गई हो। उनके सामने २५-३० वर्ष की एक नवयुवती पहले से ही वहाँ खड़ी थी। जैसे उषा की एक किरण ही रात के अंधकार को मिटा देती है, वैसे ही उस युवती को देख उनका सारा उत्साह और उमंग विदा हो चले। वह युवती वेशभूषा से सभ्य और कुलीन जान पड़ती थी। श्रीमान् विल्सन को देख घबराने की बजाय उसके चेहरे पर संतोष का भाव था, मानो वह उन्हीं की प्रतीक्षा कर रही हो।

उसे उनकी मंशा समझते देर न लगी, लेकिन वह इस विचार से उद्विग्न न हुई। इसके विपरीत श्रीमान् के होश उड़ गए। इतने वर्षों का आत्मविश्वास क्षीण होता प्रतीत हो रहा था। उनके पैर वर्हीं जम गए। उनकी समझ में न आ रहा था, अब क्या किया जाए, क्या कहा जाए। इन्हीं कुछ क्षणों में उन्होंने हजारों सवाल-जवाब तैयार कर लिए, कई तर्क सोच लिए, लेकिन कुछ भी उन्हें सहायक प्रतीत नहीं होता था। तभी बड़ी शांति और सरलता से उस युवती ने उनसे कहा, “क्या आप मेरी मदद करेंगे? मैं आज ही दूसरे शहर से अपने कुछ जरूरी दस्तावेजों की जाँच के लिए आई हूँ, जो घर के अंदर हैं। जल्दबाज़ी में घर की बजाए लॉकर की चाबियाँ ले आई हूँ। उन दस्तावेजों की जाँच बहुत ज़रूरी है, और फिर मुझे आज ही वापस भी जाना है। मुझे पता है आप यहाँ क्यों आए हैं, क्या आप मेरी मदद करेंगे?”

उसकी बातें सुनकर श्रीमान् का मुँह सूख गया, और कोई जवाब न सूझा। केवल सर हिलाकर उन्होंने हामी भरी।

उनके हाथ ऐसे कामों के अभ्यस्थ थे, पर आज बात कुछ अलग थी। वो जल्द से जल्द ये सब निपटा कर यहाँ से अपनी जान बचाकर निकलना चाहते थे। ताले को देखकर उनकी उंगलियाँ बिना विशेष प्रयास के स्वतः ही काम पर लग गई और पल भर में ही उन्होंने ताले को खोल दिया। इतना करते ही वो बिना एक भी क्षण गंवाए, वहाँ से रवाना हो गए। जीवन में यह किंचित पहला अवसर ही था, जब बिना कुछ पाए भी वो राहत महसूस कर रहे थे। पर ये राहत भी उनसे जल्दी ही विदा हो चली जैसे ही अचानक उनके दरवाजे पर दस्तक सुनाई दी।

जेलखाने में बैठे वे अक्सर विचार किया करते थे, आखिर वो कौन थी? उस घर के मालिक एक अधेड़ दंपत्ति थे, जिनकी कोई संतान नहीं थी। उस घर के दरवाजे से श्रीमान् विल्सन की उँगलियों के निशान मिले, जिससे पुलिस उन्हें ढूँढ़ सकी। उम्र भर के तजुर्बे ने भी उनका साथ छोड़ दिया जब सामने एक नवयुवती आई, या ये सब सिर्फ परिस्थितियों का दोष था।



प्रियंका प्रियदर्शिनी पत्नी, अळण देबार्थीष, मुख्य भूविजानी

हिन्दी की परिभाषा

एक परिधान चढ़ा था विश्व गुरु का, वो परिधान बचाने में,
उमड़ी थी ज्वाला स्वर क्रांति की, माँ की सांस बचाने में।
पर क्या अर्थ हुआ,
अभियानों का, संघर्षों का, बलिदानों का,
इस तृप्त तेजस्वी छाया का,
रण के खून से लथपथ काया का ?
था सभ्यता प्रेम जो पुरखों का,
सन् सैतालीस को लांघ गया,
मुगलों-गोरों से जीता था, पर काले अंग्रेजों से हार गया।
अंग्रेजी के टूटे-फूटे शब्द मधुर लगते हैं,
साहित्य की हो वह भाषा तो अब तीर चुभने लगते हैं।
वेद में तो किस्से हैं, इतिहास उन्हें बस रहने दो,
तुलसी काली का मुख रखो, पुस्तकों में सिमटे रहने दो।
भारत माता का मस्तक भी पीड़ा से तब झुक जाता है,
जब भारत माँ का बच्चा हिन्दी बोलने में कतराता है।
माते का चंदन हिन्दी है, भारत का वंदन हिन्दी है,
गोरों का मर्दन हिन्दी है, लौटा अभिनंदन हिन्दी है।
हिन्दी राग नहीं, अनुराग नहीं, सञ्चाव नहीं, दुर्भाव नहीं,
बंदूक नहीं, सन्दूक नहीं, अलगाव नहीं, टकराव नहीं,
और जोड़े जो उनतीस बेटों को, हिन्दी तो भारत माता की आस है।
पर तिरस्कार उस आशा का, कर्म लहू बलखाता है,
जब हिन्दी माँ के समुख कोई प्रश्न चिह्न दिखलाता है।
मुझे घृणा नहीं अंग्रेजों से, ना हिन्दी का अभिमान है,
मैं भारत माँ की बेटी हूँ, मुझे उसकी भाषा का सम्मान है।



सौरभ चक्रवर्ती कार्यकारी अभियंता (इलेक्ट्रॉनिक्स)

उम्र का प्रभाव

दिन भर उछल-कूद करते और फिर भी कभी ना थकते थे,
बिस्तर से उतरने में भी आलस करना अब हमें आ गया है।
हर दिन चोट लगाना हमारे जिस चंचलता की निशानी थी,
जीवन की डगर पर फूँक-फूँक कर कदम रखना हमें आ गया है।
जिस भोजन के हर निवाले पर एक नया बहाना बनाते थे,
टीवी, मोबाइल देखते हुए अब चुपचाप खाना हमें आ गया है।
जिन दोस्तों के साथ मस्ती किए बिना एक दिन न गुज़रता था,
उनका हाल जाने बिना अब महीनों गुज़रना हमें आ गया है।
जिस बरसात के कीचड़ में लोट-पोट करना ही परम आनंद था,
बालकनी से ही अब मिट्टी की खुशबू को सराहना हमें आ गया है।
छोटी सी जेबखर्च पाकर हम खुद को अमीर समझते थे,
धन-संपत्ति कमाकर भी असन्तुष्ट रहना अब हमें आ गया है।
बिस्तर पर लेटते ही पल भर में जो गहरी नींद आ जाती थी,
करवटें बदलते हुए अब हल्की आहट पर जागना हमें आ गया है।
खेल-कूद, यारी-दोस्ती और घर-स्कूल ही हमारी दुनिया थी,
कंधों पर अब संसार के दायित्व लेकर जीना हमें आ गया है।



रिका सिंह वरिष्ठ भूविज्ञानी

साया

कल देर शाम जब मैं सॉँझ की हल्की सी लौ में
उस छत को निहार रहा था,
तो अचानक एक आवाज़ आई
देखा मैंने कि सामने फाटक पे चेहरा ढके एक साया सा था।
जब मैंने फाटक खोला तो कुछ अपना सा महसूस हुआ।
वो साया शायद मेरी दीवार, मेरे फाटक को
मुझसे बेहतर पहचानता था।
अंदर आकर वो मेरे कमरे की उसी जगह बैठ गया
जहाँ अक्सर मैं बैठ जाया करता हूँ।

उसकी आवाज़ आई,
'क्या हुआ, ऐसे क्या देखते हो,
मैं ही तो हूँ जो हमेशा तुम्हारे साथ हूँ'
याद है वो सारे पल जब खुद को हारा हुआ
और कोसता हुआ पाते हो।
ज़रा याद करो मैं वहीं तुम्हारे पीछे ही खड़ी होती हूँ,
तुम्हारा हाथ धाम कर।

वो सारी छटियाँ जो अपनों से दूर काटते हो,
याद नहीं आता फिर, किसके साथ वक्त बिताते हो।
मैं वो 'मैं' हूँ, जब अंधेरी रात में
अकेले यूँ थोड़ी सिसकती हुई आँखें लेकर
टहलने निकल जाते हो।
मैं ही तो हूँ जिसे पास अपने पाते हो।

इसी बीच, जब फोन की धंटी बजी,
तो पाया मैं तो वहीं अपने बिस्तर पर लेटा हूँ।
मैं हूँस पड़ा,
ये अकेलापन, सारे जुनून और सुकून से दूर,
एक सोच ही तो है,
जो हमेशा तुम्हारे साथ है।



सुष्मिता मुखर्जी (पत्नी)

सौरभ चक्रवर्ती, कार्यकारी अभियंता (इलेक्ट्रॉनिक्स)

श्रीशैलम की यात्रा

श्रीशैलम तीर्थ स्थान मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग के लिए प्रसिद्ध है। यह ज्योतिर्लिंग भगवान शिव के १२ ज्योतिर्लिंग में से एक है और देवी माँ के १८ शक्तिपीठों में से एक के रूप में भी जाना जाता है।

मेरे माता-पिता पिछले २ सालों से अलग अलग ज्योतिर्लिंग के दर्शन कर रहे हैं। तो इस बार जब वो जून में आने वाले थे तो हमने पहले से ही श्रीशैलम जाने की योजना बना ली थी। साथ में मेरी यह भी सोच थी कि अगर हमारा स्थानांतरण हो गया तो शायद वापस आंध्र प्रदेश आना न हो सके तो इस साल ज्योतिर्लिंग के दर्शन कर लेना ही उचित रहेगा।

गंतव्य तो तय था परंतु ४२० किलोमीटर दूर होने के कारण वहाँ तक जाने का साधन तय करना था। चूंकि रेल का साधन श्रीशैलम से करीब ५०-६० किलोमीटर दूर है, इसलिए मेरे पति ने यह तय किया कि हम सब कार से जाएंगे। मेरे पिता इस बात पे थोड़ा घबराए क्योंकि मेरे पति अकेले ही ड्राइव करने वाले थे, परंतु उन्होंने फिर ये समझाया कि हम लोग रास्ते में रुक रुक कर जाएंगे।

यात्रा की घड़ी आई और सुबह सुबह होकर, भगवान शिव का नाम लेकर निकल पड़ी मैं अपने परिवार के साथ यात्रा पर।

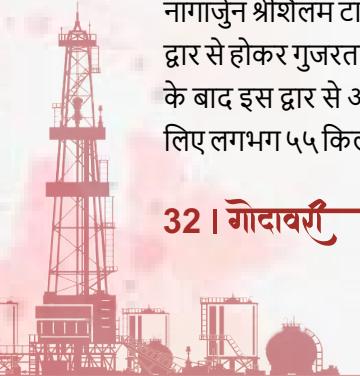
हर हर महादेव

मध्य जून का समय था जिस समय तक आमतौर पर राजमंडी में मौनसून का प्रभाव दिखने लगता है। इसलिए मैंने ये उम्मीद की थी कि मौसम सुहाना होगा और शायद रास्ते में हमें थोड़ी बारिश का भी आनंद उठाने का मौका मिलेगा। परंतु शायद उस दिन सूर्य देव कुछ नाराज से थे और वो अपना सारा गुस्सा हमारे ऊपर निकाल रहे थे। इतनी गर्मी में तो गाड़ी से निकलने का भी मन नहीं कर रहा था, इसलिए नाश्ते के अलावा हम लोग बीच में कहीं भी नहीं रुके।

४ घंटे का सफर करते हुए हम अपने पहले पड़ाव पर पहुँचे, श्री त्रिकोटेस्वर स्वामी मंदिर। मंदिर पहाड़ के ऊपर स्थित होते हुए भी मंदिर के चारों ओर बनी बड़ी बड़ी मूर्तियाँ दूर से ही आकर्षित कर रहे थे। मंदिर का प्रांगण भी काफी बड़ा था जहाँ बंदर आराम से घूम रहे थे और श्रद्धालुओं के हाथों से प्रसाद भी खा रहे थे। यह दृश्य काफी रोमांचक था। मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग में बाबा भोलेनाथ के दर्शन से पहले हमने इस मंदिर में उनका आशीर्वाद लिया। गाड़ी में लगातार बैठे हुए जो मेरे १ साल के बेटे को इधर उधर करने का मौका नहीं मिल रहा था, वह खुली जगह पाकर प्रफुल्लित हो गया और भाग दौड़ करने लगा। यह देख कर हम सब की थकावट भी दूर हो गई और हम लोग आगे की यात्रा के लिए सज्ज हो गए।

मंदिर प्रांगण से नीचे की ओर थोड़ी ही दूर हम गए थे कि मैंने देखा वहाँ पर एक पार्क था जिसके चारों तरफ घने पेड़ भी थे। गाड़ी से उतरते ही दूसरी ओर छोटा सा चिड़ियाघर भी मुझे दिखा। हम लोग वहाँ रुक गए और ठंडी हवा और पक्षियों का लुत्फ उठाने लगे। समय काफी हो गया था इसलिए मन लोभित होने के बावजूद हम वहाँ ज्यादा समय गुजार नहीं सके और आगे की यात्रा के लिए निकल पड़े।

नागर्जुन श्रीशैलम टाइगर रिजर्व भारत का सबसे बड़ा टाइगर रिजर्व है। श्रीशैलम तीर्थस्थान जाने का रास्ता इस टाइगर रिजर्व के मुख्य द्वार से होकर गुजरता है। वन क्षेत्र होने के कारण यह मुख्य द्वार सुबह ६ बजे से शाम के ५ बजे तक ही खुला रहता है और शाम के ५ बजे के बाद इस द्वार से आगमन की अनुमति नहीं दी जाती है। इस मुख्य द्वार के बाद घाटी शुरू हो जाती है और मल्लिकार्जुन पहुँचने के लिए लगभग ५५ किलोमीटर की दूरी इस घाट रोड पर करनी होती है।



हमारा लक्ष्य ५ बजे से पहले मुख्य द्वार से प्रवेश करना था इसलिए समय की पाबंदी होने के कारण मेरे पति तेजी से गाड़ी चला रहे थे। मुझे भूख भी लग चुकी थी, मगर मन में यह डर भी था की कहीं भोजन के चक्कर में द्वार ना बंद हो जाए। जब मैंने देखा की हम मुख्य द्वार के काफी पास आ चुके हैं और समय भी काफी बचा है तो मैंने भूख का ज़िक्र किया। मगर जिस जगह पर हमलोग थे वहाँ दूर दूर तक भोजन की सुविधा दिखाई ही नहीं दे रही थी। थोड़ी दूर और चलने पर किस्मत से हमें एक भोजनालय दिखा। वहाँ हम लोग फटाफट खाना खाकर निकल पड़े। अब हमें कहीं रुकना नहीं था इसलिए लगातार ड्राइव कर के हम लोग श्रीशैलम तीर्थ स्थान पहुँच गए।

वहाँ पहुँच कर सबसे पहले हम ठहरने की जगह खोजने लगे। आमतौर पर मैं कहीं घूमने जाती हूँ तो होटल पहले से ही बुक कर लेती हूँ, मगर श्रीशैलम में सिर्फ एक ही होटल की बुकिंग अॅनलाइन होती है जो कि पहले से ही भर चुकी थी। मैंने सोचा कि वहाँ कई सारे होटल होंगे और उनमें से किसी में भी हमें कमरे मिल जाएंगे। मगर हमें क्या पता था कि भोलेनाथ को हमारी परीक्षा लेनी थी। शनिवार और लगातार ३ दिन छुट्टी होने के कारण काफी भीड़ थी। हम लोग करीब २० होटल के चक्कर लगाए मगर कहीं भी कमरा खाली नहीं मिला।

मैं तो बिल्कुल हताश हो गई थी और सोच रही थी की छोटे से बच्चे को लेकर कहीं कार में ही ना रात गुजारनी पड़े। मगर कहते हैं ना, “भगवान के घर देर है अंधेर नहीं”। भोलेनाथ की परीक्षा समाप्त होने पर उनका ही एक दूत शायद मनुष्य रूप में हमारे पास आया और पूछा कि क्या हमें कमरे चाहिए। ये शब्द तो जैसे मेरे कानों में अमृत वाणी की तरह प्रवेश कर गए। हताश मन अचानक से प्रफुल्लित हो गया और “हर हर शंभू” का नाम लेकर हम लोग उस व्यक्ति के साथ जाकर होटल में कमरा ले लिए।

राजमंड्री से तो मैं यह योजना बना के आई थी कि शनिवार शाम में भोलेनाथ के दर्शन हो जाएंगे और रात में अच्छे से आराम करने के बाद रविवार को अन्य दर्शनीय स्थानों के भ्रमण कर वापस राजमंड्री के लिए निकल पड़ेंगे। मगर कमरा खोजने में काफी समय व्यतीत होने के कारण, हमारे पास आराम करने को समय नहीं था। इसलिए समय बिल्कुल नष्ट किए बिना हम लोग फटाफट तैयार होकर मंदिर की ओर दर्शन के लिए निकल पड़े।

मंदिर के प्रवेश द्वार पर जब हम लोग शाम के ८:४५ पर पहुँचे तो पता चला कि दर्शन के लिए द्वार ८:३० तक ही खुला रहता है। विनती करने पर भी हमारे लिए द्वार जब नहीं खुला तो एक बार फिर से मन उदास हो गया। हमारे पास कोई और चारा तो था नहीं, इसलिए हम लोग भोजन कर, कमरे में आराम करने को चले गए।

अगले दिन जल्दी दर्शन करने के लिए हम सब सुबह सुबह तैयार हो गए और मंदिर के द्वार पर पहुँच गए। कतार में लगने के बाद उसी भीड़ के साथ साथ हम दर्शन के लिए आगे बढ़े। कुछ समय बाद मल्लिकार्जुन (भोलेनाथ) और भ्रमरम्बा देवी (माता पार्वती) के दर्शन का सौभाग्य मुझे मिला और इस दर्शन से मैं धन्य हो गई। बाहर निकलने के बाद थोड़ी थकान तो थी मगर समय काफी हो जाने के कारण आराम करना संभव नहीं था। इसलिए हम लोग सबसे पहले नाश्ता किए और फिर बाकी जगह घूमने के लिए निकल पड़े।

सबसे पहले हम पहुँचे पाताल गंगा जो कि कृष्णा नदी का ही एक हिस्सा है। नदी के तट तक पहुँचने के लिए या तो रोप वे का रास्ता था या फिर ५८२ सीढ़ियों से नीचे उतरनी थी। समय, गर्मी और गोद में छोटे बच्चे को देखते हुए हमने रोपे वे बुक कर लिया। नीचे पहुँच कर हमने पाताल गंगा के दर्शन किए और जल से माता को अंजली प्रदान कर उन्हें प्रणाम किया। पास में ही होने के कारण नदी के तट से ही श्रीशैलम बांध का नज़ारा भी हमें देखने को मिला। काफी भीड़ होने के कारण रोप वे से ऊपर आने में भी हमें काफी समय लग गया।

फिर हम लोग साक्षी गणेश मंदिर गए। माना जाता है कि इस मंदिर में जाकर गणेश भगवान के सामने साक्षी होने के बाद ही मल्लिकार्जुन के दर्शन सफल होते हैं। तो हम लोग भगवान गणेश के दर्शन कर उनके आशीर्वाद लेकर घाटी से नीचे की ओर निकल पड़े। मुख्य द्वार से निकलने के बाद ही हम भोजन के लिए रुके। भोजन करने के बाद भोलेनाथ का नाम लेते हुए हम वापस राजमंड्री के लिए निकल पड़े। लगातार ड्राइव करते हुए रात के २ बजे तक हम राजमंड्री वापस पहुँच गए।

यह २ दिनों का सफर काफी आध्यात्मिक और रोमांचक था जिसमें हमने काफी कुछ देखा। इस तरह से हमारी यह श्रीशैलम की यात्रा मंगलमय रही।

ॐ नमः शिवाय।





श्रेता साही (पत्नी) ज्योति कुमार सिंह, प्रबन्धक (सामग्री प्रबंधन)

स्त्री सुरक्षा : महत प्रश्न

नारी भी ईश्वर की डी हुई एक सौगात है,
यह सब भूल तुम इतने क्रूर क्यों बन जाते हो!
नारी को तुम अबला मानकर,
क्रूरता क्यों दिखलाते हो॥

दुर्गा, काली, अम्बे माँ की आरती तो तुम ही उतारते हो,
फिर अकेली नारी देख दरिद्रे क्यों बन जाते हो।
जब नारी होना कोई दोष नहीं,
फिर तुम दानव दल के अगुवान क्यों बन जाते हो॥

जिसकी कोख से तुमने जन्म लिया,
बस उसके लिए चिंतित हो।
बेबस बेटियों को देख तुम,
इतना क्यों बौखला जाते हो।

इतनी ज्यादा नफरत तुम,
कहाँ से लेकर आते हो।
चीर-फाड़ के नोच-खसोट के,
दो टुकड़े कर जाते हो।
तुम हैवानों सी हैवानियत,
कहाँ से पाते हो।

किसी की बहन, किसी की बेटी होगी,
किसी के बाग का इकलौता गुलाब होगा।
ये ख्याल ज़रा भी नहीं क्या,
तुम्हारे दिमाग में आया होगा।

कब तक जीना पड़ेगा हैवानों के डर से,
कब तक मोमबत्तियाँ जलाना होगा।
न्याय पाने के लिए क्या बार-बार,
न्यायालय की चौखट खटखटाना होगा।
क्या कानून की किताब में कुछ बदलाव लाना होगा,
समाज को इस प्रश्न का उत्तर जल्द ही बताना होगा।



उत्कर्ष भरद्वाज (पुत्र)

श्री मधुकर मिल्की (मुख्य भौमिकी विज)

रांची का छोरा

1

जल मिस्ती के घर जन्मा
नहा सा रांची का छोरा ।
आँखें थी चमकीली उसकी
सांवला सा रांची का छोरा ।

प्रशिक्षक ने खेल सिखाया
बना मस्त कलंदर ।
जोश भरा था सीने में
और जूनून दिल के अंदर ।

अवसर पाकर बल्ला थामा
मारा छक्का मारा चौका ।
अपने दल को जीत दिलाई
नहीं छोड़ा कोई भी मौका ।

नयन मूँद कर साहस समेट कर
छोड़ी रेल और पकड़ा खेल।
शीघ्र ही होने वाला था
दृढ़ निश्चय और सिद्धि का मेल।

2

छोटे कद का था वह बालक
पर बड़ी गेंद से खेलने वाला ।
बार-बार मनाने पर भी
छोटी गेंद न झेलने वाला ।

गुरु जी की आज्ञा पाकर
पहुंचा विकेट के पीछे ।
किसे था ज्ञात कि एक दिन
जग भागेगा उसके पीछे ।

खेल के मैदान से निकला
पहुँच गया स्टेशन के अंदर।
जीवनप्रद अवसर की आस में
हिम्मत हारने लगा धूरंधर ।

ईश्वर की अनुकम्पा हुई
दौड़ पड़ा सफलता का घोड़ा ।
अब कहाँ रुकने वाला था
वो मतवाला रांची का छोरा ।

3

देशवासियों के आशीर्वाद से
बना बहुत महान।
अहंकार से रहा वो दूर
अपनाया ऐसा ब्रह्म ज्ञान ।

देश के लिए जीतता रहा
खेल का हो कोई भी प्रारूप।
तन-मन सब समर्पित किया
मेघ गरजे या पड़े तीव्र धूप।

आया वह जब भी मैदान में,
आशा देश की कभी न तोड़ा ।
सर्वदा देश का मान बढ़ाया,
फिर भी मौन रहा रांची का छोरा ।

आज्ञादी का दिन अब आया
माही ने तब मौन को तोड़ा।
कहा जोहार निज प्रिय खेल को
घर लौट आया रांची का छोरा।





रिवा सिंह वरिष्ठ भूविज्ञानी

ठंडी शाम

थोड़ा सुकून, कुछ अपने,
सफर में थोड़ा आराम
और इस नकाब की दुनिया में
चंद लोग आम,
मैं तलाशता हूँ।
मैं बहुत बेताबी से
इस चिलचिलाती धूप में
एक ठंडी शाम तलाशता हूँ।

इस ढकोसलेबाजी से दूर,
एक छोटा सा कस्बा
उस कस्बे में अपनापन
किसी की दुआओं में अपना घर
और हर रोज खुशी से भरी एक मुस्कान तलाशता हूँ।
मैं बहुत बेताबी से
इस चिलचिलाती धूप में
एक ठंडी शाम तलाशता हूँ।



सौरभ चक्रवर्ती कार्यकारी अभियंता (इलेक्ट्रॉनिक्स)

इंसान का धर्म

कर्म को बना अपनी पहचान, त्याग दे तू आलस
धर्म के इस मार्ग पर ना करना कभी भी तू लालच ।

आगे बढ़ने की धुन में, ना कुचल तू दूसरों के सपनों को,
गैरों से भी कर तू प्रेम, क्योंकि सभी तो करते हैं अपनों को ।

मदद कर तू हर कमज़ोर की, ना भूलना कभी इंसानियत
स्वभाव से रह तू विनम्र, चाहे जितनी भी हो जाए हैसियत ।

खुश हो तू दूसरों के भी सफलताओं पे, ईर्ष्या से हो तू खाली
छल -कपट से हो तू परे, जो लाएगी समृद्धि और खुशहाली ।

कटुता निकाल अपने मन से, बन तू दिल से कोमल
सच्चाई का हाथ थाम के, रह इरादों से हमेशा अटल ।

हंसते हुए झेल कठिनाइयों को, ना हो तू उनसे गुमराह
सुख में तो सभी खुश हो लेते हैं, तू दर्द में भी मुस्कुरा ।

ना घबरा कभी आलोचना से, बना उनको भी अपना मित्र
तेरी गलतियां ही हैं तेरी सीख, जो निखारेगी तेरा चरित्र ।

लगन से करता चल कर्म तू स्वयं बन अपनी किस्मत का कुम्हार
सादगी, स्वास्थ्य और मेहनत ही करेगी तेरे जीवन का उद्धार ।

अर्जुन की तरह नज़रों में रख तू केवल अपनी मंज़िल
तब ही पाएगा लक्ष्य तू, चाहे कितनी भी आ जाए मुश्किल ।



मधुकर मिल्की मुख्य भौमिकी विज़

हनुमान बागा चाय सम्पदा (एस्टेट)

एक अमिट संस्मरण

वर्ष अंतराल २०१७-२०२। ये वह समय है जब मैंने और मेरे परिवार ने और मेरे बहुत सारे सहकर्मियों ने असम के नाजिरा क्षेत्र में व्यतीत किया।

ये ४ वर्ष हम सब के जीवन का एक अभिन्न अंग बन चुके हैं। वैसे तो बहुत सारे अनुभव नाजिरा ने हमें दिए परन्तु सभी अनुभवों को एक साथ संजो कर परोसना थोड़ा कठिन है। इसीलिए इस संस्मरण में मैं असम के चायबागानों के अपने अनुभव को श्वेत पटल पर कलमबद्ध कर आप सभी के समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ।

पूर्वी असम में अधिकतर चाय उद्यान संगठित निगमों द्वारा संचालित किये जाते हैं। पूर्वी असम और दार्जिलिंग में विश्व की २० प्रतिशत से भी अधिक चाय का उत्पादन होता है। ऐसे में इन क्षेत्रों को चाय की प्याली का संज्ञान देना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

वैसे तो मैं "तेल कूप क्षेत्र (वेल साइट)" पर आते जाते बहुत से चाय बागानों से होकर गुजरा हूँ परन्तु एक रोज़ मेरे परिवार ने भी चाय बागानों की विस्तृत सैर की मांग कर डाली। एक रविवार को मैं प्रातः ही अपने परिवार के साथ गेलकी स्थित "हनुमान बाग चाय एस्टेट" पहुँच गया। सड़क के दोनों तरफ बिलकुल एक बराबर के चाय के पौधों का एक विशाल समुन्दर सा लगा। ऐसा लगा जैसे प्रकृति ने धरती के इस अंश को ढकने हेतु हरे रंग की एक मनभावन कालीन बिछा रखी हो। ताज़ी हवा, प्रदूषण रहित वातावरण और निर्मल हरियाली ने चक्षुओं को शीतलता का अनुभव कराया। अपने व्यस्त अनुसूची में से एक आवश्यक अवकाश लेकर कुछ क्षणों को प्रकृति के साथ साझा करना एक अलग ही आनंद दिला रहा था।

हनुमान बाग चाय बागान में सैकड़ों की संख्या में कामगार अपने निर्धारित स्थानों की ओर पीठ पर बांस की टोकरी लादे हुए बढ़ रहे थे। तोड़ी हुई पत्तियों को संकुलन क्षेत्र में ले जाने के लिए बड़े जालीदार पत्रों से युक्त गाड़ियों की एक सुनियोजित पंक्ति अपनी बारी की प्रतीक्षा कर रही थी ताकि भरने के बाद उन पत्तियों को आगे की प्रक्रिया के लिए प्रसंस्करण केंद्र में ले जाया जा सके। चाय बागान के अंतर्गत संवेष्टन केंद्र और अपनी पीठ पर टोकरी लगाए बागानों से चाय की पत्तियां बीनते हुआ श्रमिकों का समूह एक अलग ही अनुभव करा रहा था। यद्यपि चाय बागान के आसपास का वातावरण बहुत उष्ण और नम था जिसके कारण वहाँ ज्यादा देर खड़े रह पाना कठिन हो रहा था, अपितु बागानों के बीच खड़े होकर चारों ओर हरियाली ही दिखाई पड़ती थी मानो धरती पर घाना हरा कालीन बिछाया गया हो। उद्यानों के मध्य में ऊँचे-ऊँचे वृक्ष श्रमिकों को छाया देने का कार्य करते हैं।

प्रत्येक बागान में ताज़ा अंकुरित चाय की पत्तियों को ही तोड़ा जाता है। उत्तम चाय की पत्ती के लिए दो पत्ते और एक अंकुर एक साथ तोड़े जाते हैं। सहसा मेरे अधरों पर स्व. भूपेन हज़ारिका जी द्वारा रचा हुआ एक गीत आ गया "एक कलि दी पत्तियां नाजुक-नाजुक उँगलियाँ, तोड़ रही हैं कौन ये रत्नपुर बागीचे में"। इतने में मैंने देखा कि मेरी श्रीमती जे ने भी एक टोकरी अपनी पीठ पर लगाए हुए ५०-६० पत्तियां और अंकुर बीन कर एक विजयी मुस्कान के साथ मेरी ओर जीत का इशारा किया जैसे इस प्रयोग के साथ अपने अनुभव के पत्रों में एक नया अध्याय जोड़ लिया हो।

दोपहर लगभग १२:३० बजे सभी श्रमिक मध्याह्न भोजन के लिए छोटे-छोटे समूहों में सड़क के किनारे पंगत लगा कर बैठ गए। सब अपने घरों से ही भोजन ले कर आये थे जिनमें प्रमुख थे चावल, सब्जी, अचार और प्याज़। उस मनोरम वश्य को मैंने अपने प्रतिबिम्ब की पेटी में समाविष्ट कर लिया। वहां के मुंशी जी से बातचीत के क्रम में थोड़ी सामान्य ज्ञान में भी वृद्धि हुई। एक टोकरी में लगभग ५ किलो पत्तियां आती हैं। एक श्रमिक औसतन ६० से ८० किलो तक पत्तियां एक दिन में बीन लेता है, जिसके लिए उसे ३ से ४ रूपए प्रति किलो की दर से भुगतान किया जाता है। श्रमिकों को भोजनावकाश के अलावा दो छोटे अवकाश चाय पीने के लिए भी दिए जाते हैं। चाय बागानों के अधिकतर श्रमिक झारखण्ड और छत्तीसगढ़ के मूलनिवासी हैं जो इन चाय बागानों के इर्द-गिर्द बस गए हैं। संध्या काल में इन श्रमिकों के चेहरे पर संतुष्टि का एक भाव लिए अपने घरों की ओर लौटते हुए देख कर मन भाव विभोर हो गया। असम के ये चाय बागानों की धरोहर बहुत ही आकर्षक और मनोरम है। स्वाद भरी चाय के साथ साथ असंख्य श्रमिकों के रोजगार का भी प्रमुख स्तोत है।

इन मनभावन चाय बागानों के दर्शन तथा घर तक चाय पहुँचाने के पीछे छिपे कठिन परिश्रम का अनुभव करने के बाद जब भी मैं चाय की प्याली को अपने अधरों से लगाता हूँ तब मन ही मन उन मेहनतकश और अनुशासित श्रमिकों को सर्वदा नमन करता हूँ।





राजश्री मजूमदार (पत्नी) श्री संजीव पी मजूमदार, महा-प्रबंधक (उत्पादन)

हिंदी हमारी अस्मिता, हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा

सब को हिंदी में, "नमस्कार"
हिंदी हमारी अस्मिता, हिंदी हमारी
संस्कार,
हिंदी हमारी जीवनशैली है, हिंदी हमारे शिष्टाचार।

हमारी स्वतंत्रता का प्रतीक,
देश को एकता के सूत्र में बांधने वाली
मजबूत कड़ी हो तुम,
विविधता में एकता, देश को जोड़ने में सबसे आगे हो तुम।

ये वह भाषा है
जिसमें हम जीते और मरते हैं।
ये वह भाषा है
जिसमें हम अपने सपने रचते हैं।

हिंदी दिवस एक पर्व है,
इस पर हमें गर्व है,
हिंद मेरा देश है, हिंदी मेरी राष्ट्रभाषा,
यही है हिंदी की परिभाषा।
हम सब की यही है अभिलाषा,
सम्मानित हो हमारी राष्ट्रभाषा।

आओ हम सब हिन्दी को अपनाएँ
देश दुनिया में इनकी मान बढ़ाएँ
आओ मिलकर मुहीम चलाये,
आज ही से हिन्दी को अपनाए।

हिंदी को कालजयी बनाना है,
देश को प्रगति की और ले जाना है।
केवल १४ सितम्बर को ही नहीं,
प्रति दिन 'हिंदी दिवस' मनाना है,
प्रति दिन 'हिंदी दिवस' मनाना है।

श्रीमती (हिंदीतर भाषी)
पति- श्री संजीव पी मजूमदार, महा-प्रबंधक (उत्पादन)
सीपीएफ-८१७९४, दुरभाष-९४२७५०४७३२





आयल एंड नेचुरल गैस कारपोरेशन लिमिटेड
राजमहेंद्री परिसंपत्ति, राजमहेंद्री, आंध्र प्रदेश